भारत माताना आंसू

अने

ब्रह्मचर्यनी दृष्टि

लेखक

वासुदेव शर्मा

प्राप्तिस्थान

द्वारकादास स्टोअर्स, स्टेशन रोड,

कुर्ला मुंबई नं. ७०

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भारत माताना आंसू
अने
ब्रह्मचर्यनी दृष्टि

लेखक
वासुदेव शर्मा

प्राप्तिस्थान
द्वारकादास स्टोअर्स, स्टेशन रोड,
कुर्ला मुंबई नं. ७०

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

© १९७१, वासुदेव शर्मा

कीमत एक रुपिया

प्रकाशक : वासुदेव शर्मा, द्वारकादास स्टोअर्स, स्टेशन रोड, कुर्ला मुं. नं. ७०
मुद्रक : वि. पु. भागवत, मौज प्रिंटिंग ब्यूरो, खटाववाडी, गिरगाव, मुंबई ४

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लेखकनुं निवेदन

हुं कोई लेखक नथी, लेखन–शैलीपण मारामां नथी, हुं विचारक पण नथी, पण आजनी देशनी परिस्थिति असह्य लागवाथी मारा अनुभवो अने विचार आपनी समक्ष मुकी रह्यो छुं.

गांधीजीए मने तेओ साथेनी प्रथम मुलाकातमां दरिद्र-नारायणनी सेवामां जीवन विताववानो आदेश आप्यो हतो. सने ३०–३२ ना आझादीना आंदोलनमां में भाग लीधो हतो, सने ३५ थी हुं गामडाओमां रही रचनात्मक काम करतो रह्यो छुं. गांधीजीए आझादीनुं जे स्वप्न-चित्र दर्शाव्युं हतुं तेनाथी आकर्षण पामी हुं गामडाओना पुनर्निर्माणना कार्यमां लागी गयो.

आझादी आवतांज मारी बधीए आशाओपर पाणी फरी गयुं. एवो भास थयो के एक गुलामी गई, अने बीजी एनाथी बदतर गुलामी आवी. छतां पण सतत श्रद्धाथी रचनात्मक काममां लागी रह्यो. वच्चे भूदान-ग्रामदान आन्दोलन शुरू थयुं एटले थोडी आशाना किरण देखावां लाग्या पण फरी निराशा पथराई. विदेशी सरकार जे रीते प्रजाना वास्तविक उत्कर्षना कार्यमां कोई रस न होती लेती अने उदासीन रहेती हती एवीज वलण आजनी सरकारनी भूदान–ग्रामदान आन्दोलन तथा प्रजोत्कर्षना कार्य प्रति रही छे. आथी मारुं लोही जे प्रकारे ब्रिटिश सत्ता विरुद्ध उकळतु हतुं तेनाथी पण वधारे देशनी सत्तानी विरुद्ध उकळी रह्युं छे.

हजार दोढ हजार ग्रामडां में जोया, ते गामडाओनी दुर्दशा अने दयाजनक अवस्था जोया बाद मने एम लाग्युं के गामडानां शोषणनी करुण–कहाणी कोई नर-पिशाचना दाटेला मुडदाने संभळावीए तो ते मुडदुं पण पापना भय अने लज्जाथी थरथर कांपवा लागशे.

त्यारथी मारा कानोमां स्वा. विवेकानंदना आ उद्गार सतत गुंजे छे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

" Vow Then to devote your whole lives to the cause of the redemption of 300 millions going down and down everyday."

"माटे त्रीस करोड लोको जे रोज नीचे अनें नीचे डूबता जाय छे तेमनें ऊंचे लाववा सारुं तमारी पूर्ण जिंदगी समर्पित करवानी प्रतिज्ञा करो"

आ २५ वर्षोमां राजनीति, अर्थनीति तथा शिक्षण-व्यवस्थाना कारणे देशनो नैतिक स्तर एटलो नीचो पडेलो जणाय छे के कदाच अंग्रेजोनां १५० वर्षना शासन-काळमां पण एटलो नीचे नहिं जणाय. गुलामी काळमां थोडी जागृति हती, तथा बलिदान अनें त्यागनी भावना तथा तैयारी हती. सरकारी अत्याचारों विरुद्ध अवाज उठतो हतो. हवे ते पण रह्यो नथी.

आ बधा कारणोथी मारा अंतःकरणमाथी आ प्रार्थना सैकडों वार निकळी के-

हे प्रभो! हे सर्वोतरयामी! ज्यां सुधी भारतनो शिक्षित-वर्ग, उच्च-वर्ग, शासक-वर्ग अनें शोषक-वर्ग पेला असहाय, निःशस्त्र, ज्ञानहीन अनें साधन-हीन ग्रामीण वर्ग साथे पोताना करेलां कुकृत्यो माटे पोते चलावेली शोषण-व्यवस्था माटे घोर पश्चात्तापनी साथे प्रायश्चित्तपूर्वक संपूर्ण मानवीय न्याय नहिं करे, तेना झुंटवी लीधेला मानवीय अधिकार पाछा तेनें न सोंपे तथा ज्यांसुधी आ अन्नदातावर्ग मानवीय गुणोथी युक्त थईनें स्वाभिमान-पूर्वक मनुष्यो जेवी जिंदगी वितावना न लागे, अनें ज्यांसुधी तेनें जीवनो-पयोगी बधी वस्तुओ पुरता प्रमाणमां न मळें तथा तेमनीं कांध उपरथी शोषण अनें शासननो बोजो न हठावाय त्यांसुधी हे प्रभो! हे सर्वकल्याण-कारिणी शक्ते! मनें फरी फरी जन्म दे जेथी करीनें हुं तेमनी सेवा करी शकूं, मने वधुंमा वधु सामर्थ्य दे जेथी हुं तेमनुं दुःख दुर करतो रहुं. हे प्रभो! मनें वधु शक्ति आपो जेथी हुं तेनापर थनारा अन्याय दुर करी शकूं.

मनें पूर्ण विश्वास छे के ईश्वर मारी प्रार्थना सांभळशे, मारी प्रतिज्ञानुं पालन करावशे,

☆ ☆

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हूं एवी आशा थी आ पुस्तक लखी रह्यो छुं जेथी भारत स्वा. विवेकानंद, योगी अरविंद अने म. गांधीजीनी भारत माटेनी महान् आकांक्षाओने साकार करीने विश्वने हिंसा, युद्ध, विनाश अने गंदी राजरमतोना विष-चक्र-माथी उगारी ले.

आ पुस्तक फक्त विचार-प्रचारनी दृष्टिथी हुं लखी रह्यो छुं. अने एटलाज कारणोसर आमांथी कईपण धन-प्राप्तिनो अवकाश राख्यो नथी.

मारा आ पुस्तक लखाण अने प्रकाशनना काममां जे जे सद्गृहस्थोए मने सहकार आप्यो छे ते सर्वेनो आ तके हार्दिक आभार मानुं छुं.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ईश्वर–नियामक अने नियम–स्वरूप

आ सचराचर विश्वमां सर्वत्र व्यवस्था उपयोगिता, स्वच्छता, सादाई प्रेम तथा सौंदर्य देखाय छे. ग्रहोमां परस्पर आकर्षण छे. ते पण प्रेमनुंज रूप छे. एम प्रेम ए चेतन-जीवोनो स्वभाविक अनें सर्वोपरी गुण छे. एम पण कही शकाय के बधा सद्गुण अनें दुर्गुणोपण आ प्रेममांथीज पेदा थाय छे.

ईश्वर पूर्ण विवेक छे. तेनें आपणी माफक विचारवुं नथी पडतुं. ते पोते नियम बनावतो नथी. ते पोतेज नियम-स्वरूप छे, नियामक पण छे. अनंत ब्रह्माण्डोंना रचनारनें न आपणे पूरी रीते जाणी शकीए छीए के नथी तेनुं वर्णन करी शकता.

जीवसृष्टिमां मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी छे. आ सर्वश्रेष्ठ प्राणीने बनाववामां रचनारानो कोई उदात्त हेतु जरूर हशे.

परमात्माए मनुष्यनें ए माटे पेदा करेल छे के ते पोताना रचनारानें ओळखे, जाणे अने ए वात पण जाणीले के ते रचनाराथी जुदो नथी, हुं ब्रह्म-स्वरूप छुं, प्रेम–स्वरूप छुं. आ आखी सृष्टि ब्रह्म-स्वरूप छे, प्रेम-स्वरूप छे. आ सर्वव्यापी तत्त्वनें जाण्या बाद ते स्वभावथीज पोताना आ अनंत रूपो उपर प्रेम करवा लागे छे.

घणा लोको आ सृष्टिना भव्य सुंदर तथा आश्चर्यचकित करी देनारा स्वरूपनें जोईनें एना रचनारानी शोधमां लागी जाय छे. अनें छेवटे ब्रह्मात्मैक्यनी अनुभूति प्राप्त करीनें कृतार्थ थयी जाय छे.

केटलाक लोको आ सृष्टिनुंज अथवा तो एम कही शकाय के आ पंच महाभूतोनुंज ऊंडु अध्ययन अनें निरीक्षण करीनें प्रकृतिनुं रहस्य जाणीनें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कईक आविष्कार करे छे. आ आविष्कारो द्वारा ते मानवजातिने वधारे सुखी अने समृद्ध बनावे छे.

पहेली श्रेणीना लोकोने आपणे संत अथवा महापुरुष तथा बीजी श्रेणीना लोकोने आपणे वैज्ञानिक कहीए छीए.

आ बंने श्रेणीना लोकोनुं कहेवुं एम छे के आ ब्रह्माण्डमां सर्वत्र एकता छे. संतुलन छे. परस्पर संबंध छे. बधामां एकज परमात्मा छे, एकज चैतन्य छे. जडवस्तुओमां ते सुप्त अवस्थामां छे. अने चेतन जीवोमां ते प्रगट अवस्थामां छे.

आथी आपणे आपसमा राष्ट्र-भेद, रंगभेद, जाति-भेद, वर्ग-भेद, इत्यादि असंख्य भेदभावोने भूली जईने परस्पर एकताने मजबूत करवी जोईए. आखी मानव-जातिने एकज प्रेमसूत्रमां बंधावुं जोईए.

आज रीते आपणे आपणा पोताना अने राष्ट्रना जीवन-यापणा माटे जे कंई व्यवस्था करवी छे तेनाथी सृष्टिनां संतुलनमां कोई पण बाधा, विरोध के विकृति पेदा न थाय ते जोवुं रह्युं.

आ रीते आपणे अध्यात्म अने विज्ञानने जोडीने तेना आधार पर मानव-समाजनी रचना करीए तो आखी दुनिया नंदनवन थई जाय. मनुष्य-समाजमां सर्वत्र प्रेम, सेवाभाव, तथा सहयोगनी भावना नजरमां आवे.

आथी उल्टुं जो आपणे आपणी समाजव्यवस्था, शासन-व्यवस्था तथा अर्थ-व्यवस्था द्वारा माणस माणस वच्चेनी एकतामां परस्पर-विरोध, संघर्ष, द्वेष अने शोषण पेदा करीए तथा प्रकृतिनां संतुलनमां पण अवरोध अने विघ्न नाखीए तो धीरे धीरे निश्चित रूपथी तेवा भीषण परिणाम आपणे भोगववा पडे छे. आवा परिणाम नजरे जोया पछी पण आपणे जाग्रत थईने जीवननी दिशा न बदलीए तो अंतमां आखी मानवाजातिने अनर्थ, संकट, भुखमरो, स्पर्धा, द्वेष अने हिंसानी उंडी खाईमा पडीने विनाश नोतरवुं पडशे. आ शताब्दीनी शरुआतथी दुनिया केटली झडपथी आ विनाशनी परंपराओ तरफ़ वधी रही छे ते प्रत्यक्ष छे.

सृष्टिकर्तानी केटली अद्‌भुत व्यवस्था छे ? आपणे खेती करी शकीए,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अनाज पेदा करी शकीए. जीवता रही शकीए ए माटे आकाशमांथी पाणी वरसे छे. जमीन खोदवाथी पाणी निकळे छे. गरमीनां दिवसोमां तरस छीपावनारा फळ पेदा थाय छे. मरुभूमिमां त्यां जीवी शके एवा प्राणी "उंट" पेदा थाय छे. मरुभूमिमां सर्वत्र पाणी नथी होतुं. जमीनमां घास उगतुं नथी. पग रेतीमां घसाय छे. ते माटे दयालु सृष्टिकर्ताए उंटना गळामां एक लांबी नळी जेवुं दीधुं छे जेमां ते पाणी संग्रही शके. तथा घणा दिवस सुधी तरस छीपावी शके. लांबी गरदन आपी छे जेथी ते ऊंचा झाड उपरना पांदडां खाई शके. तथा पग एवा बनाव्या छे के ते रेतीमां घसाय नहिं. एक नगण्य प्राणीनी बनावटमां केटली दया, विवेक अने व्यवस्था छे ?

एज प्रमाणे जे देशमां जे समये जेवा गुणो 'अने पुरुषार्थ शक्तिथी युक्त एवा महान् स्त्री-पुरुषोनी जरूरत होय छे तेवाज स्त्री-पुरुषो त्यां पेदा थाय छे. अने तेओ ते ते समये ते ते देशना लोकोने त्यारे प्रवर्तित अनर्थोनुं भान करावीने आगळनी सुख-शांति तथा समृद्धिनो मार्ग बतावी आपे छे. आवा संत महान् स्त्री-पुरुषो पोताना बलिदानथी कष्ट सहन करीने तथा पोताना आचरण द्वारा मनुष्य-जातिने अनेक अनर्थोथी बचावीने शाश्वत सुख-शांति तरफ प्रवृत्त करावे छे.

एवा समये ते ते देशवासीओ एवा सत्पुरुषोनी शिखामण प्रमाणे चाले पूर्ण श्रद्धाथी तेनुं अनुसरण करे तो घणी विपत्तियोथी बची जाय पण आपणे सौ तेम करता नथी. जेटली हद सुधी आपणे तेनुं कह्युं सांभळीये छीए तेटली हद सुधी आपणुं भलुं थाय छे. जेटली हदथी आपणे पाछा हठीए छीए तेटली हद सुधी आपणुं अकल्याण थाय छे.

शुं आवा दयाळु परमात्माए आपणने शारीरिक, मानसिक रोग, भूखमरो अनथ, संकट, हिंसा, युद्ध अने बिनाशनो शिकार बनावी सृष्टिनो नाश करवा माटे पेदा कर्या छे ?

नाना नाना बाळको मा उपर श्रद्धा न राखे दरेक वातमां पोतानी अक्कल चलावे मानी आज्ञा पालनने अंध-श्रद्धा समजीने पोताना जेवा नादान छोकरा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ओनुं कह्युं माने तो एमां संदेह नथी के न तो एनुं ज्ञान वधशे के न तो तेनुं कल्याण थशे.

मानव-जाति बाळकोनी हालतमां छे. समर्थ रामदास स्वामीए कह्युं छे के "अंधारींचा अंध जैसा" ईश्वरने न जाणवावालो अंधारामां उभेला आंधळा जेवो छे. आखी मानव-जाति आंधळी तो छे ज. अंधारामां उभी छे अर्थात् गुमराह थयी गई छे. परन्तु अनुभवी अने ज्ञानी पुरुषोनी पाछळ चालवाने तैयार नथी. आनुं परिणाम शुं आव्युं छे? शारीरिक अने मानसिक रोगोंनी अंतरहित वृद्धि.

आ सो बसो वर्षमां अनेक वैज्ञानिको पेदा थया. तेओए पोताना आविष्कारोथी मनुष्यजातिनी सुख-समृद्धिमां वधारो कर्यो. आज अरसामां भारतमां अनेक महान् पुरुषो पेदा थया जेओए आपणने पोतानी तपस्या तथा अलौकिक पुरुषार्थथी अनेक संकटो तथा अनर्थोंथी बचावी शाश्वत सुख-शांतिनो रस्तो बताव्यो.

परन्तु आपणे शुं कर्युं? बुद्धि अने विज्ञाननो दुरुपयोग करीने आपणे आपणा अशिक्षित श्रम-जीवी ग्रामीण भाईबहेनोने आर्थिक दृष्टिथी पुरी रीते गुलाम बनावी लीधा. श्रमजीवी वर्गने लुंटवानुं काम सहेलुं थई शके एनेमाटे आपणे कागळनी नोट बनावी, करोडो रुपयानुं अनाज संग्रह न करी शकीए. पण करोडो रुपयानी नोटोनो संग्रह करी शकीए. जे जमीन ईश्वरे बधाने माटे बनावी छे तेने वेंचवा तथा खरीदवानी वस्तु बनावी. आनाथी वधू क्रूर अत्याचार शुं होई शके? आनाथी करोडो जमीन थी वंचित थया अने श्रम करवावालाने लुंटीने खावावाला शिक्षित चोर जमीनना मालिक थया. श्रम करीने समाजने अन्न देनारो वर्ग नीचो गणावा लाग्यो, अने तेने लुंटीने खानारो वर्ग माननीय तथा महोदय बनी गयो. मोटा मोटा कारखाना तथा यंत्रोना कारणे ग्रामोद्योग नष्ट थयो, उपरी सत्ताना हस्तक्षेप विना सर्व सम्मतिथी चालनारी ग्राम-पंचायतो तोडी देवामां आवी. ग्राम उध्वस्त तथा उज्जड थई गयां.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गामडाने नष्ट-भ्रष्ट करवावाला लोकोना त्रण वर्ग बनावी शकाय. शासक-शोषक तथा बुद्धिजीवी. शासक हुकूमत तथा बंदूकना जोर पर अन्नदाता अने श्रमजीवी वर्गने लुंटीने चैन करे छे. नैतिक भाषामां बोलवुं होय तो एने डाकू वर्ग कही शकाय.

बीजो छे शोषक-वर्ग. पैसा तथा वेपारना जोरपार गामडांने के श्रम-जीवी वर्गने लुंटीने मालदार बने छे एवो आ वर्ग छे. धर्मनी दृष्टीये आ चोरनो वर्ग छे.

त्रीजो छे बुद्धि-जीवी वर्ग, आ वर्ग नोकरी करीने पेट भरे छे. उपरना बंने वर्गोने मदद करीने आ तेओनी लुंटनो थोडो हिस्सो प्राप्त करी ले छे.

अहंकार, लोभ तथा अज्ञाननो शिकार थयेल सत्ताधारी, पूंजीवादी वर्गे रेडियो, जाहेरात शिक्षण-व्यवस्था, छापां तथा राजनीति द्वारा आखी प्रजाने संमोहित करीने सत्यना ज्ञानथी वंचित राखी, जेथी पोताना हाथोमां सत्ता रहे अने एना भोग-विलासमां कोई हरकत पेदा न थाय.

ईश्वर अने प्रकृतिथी लडाई अने तेना परिणाम

एवी व्यवस्था करवी मानो ईश्वर अने प्रकृतिना महान् नैतिक नियमोनी विरुद्ध एक लडाई छे. जो दुनियाभरनी सरकारो ईश्वरने केद करीने एने जेलखानामां नाखी शके अने अनंत ब्रह्मांडों पर पोतानी सत्ता चलावी शके तो अवश्य अनंत काळ सुधी तेओनुं चालशे. तेना सुखचेनमां बाधा नहिं आवे. तेना हाथोमां हमेशा सत्ता बनी रहेशे.

परंतु आ उन्मत्त सत्तावाळा ईश्वरने बंदीवान न बनावी शके के तेने फांसी उपर न चडावी शके तो आ सत्ताओ नामशेष थई जशे. आ उन्मत्त अने पागल हाथी सुंद उपसुंदनी माफक आपसमां माथा पछाडी धूळमां मळशे. आ हाथीओनी लडाईमां दुनिया भरनी प्रजा पुरी रीते छुंदाई जशे.

दुनियाभरनी सरकारोना गट थई गया छे. एने परस्पर संबद्ध स्वार्थाधारित आंतर्राष्ट्रीय गट कहेवाय. ज्ञानपूर्वक बन्या होय के अज्ञानपूर्वक बनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तो गया छे. आ मिथ्या प्रचार, पैसा अने जाकमजोळना बळ उपर चुंटणीनुं नाटक खेले छे. प्रजानी आंखोमां धूळ नांखीने मत मेळवी ले छे. पछी. ध्येयशून्य अने पुरुषार्थहीन बुद्धिजीवी वर्गनी मददथी श्रमजीवी वर्गने लुंटीने एशआरामनुं जीवन वितावे छे. आ आंतर्राष्ट्रीय गट राष्ट्रनी स्वाधीनता अथवा बीजूं कोई कारण आगळ धरी आपसमां लडे छे. पोतानी धाक जमाववा अथवा सत्ता वधारवा माटे लडे छे. आ लडाईमां गरीब प्रजानुं लोही रेडवुं पडे छे. सेना अने पोलीसमां ते लोको भरती थाय छे जे उद्योगो नष्ट थवाथी बेकार थई गया छे. शासक तो मोटा मोटा शहेरोमां पोलीस पहेरा नीचे आराम थी खुरसीपर बेसी रहे छे.

आ पचीस-पचास वर्षोमां मानवतानु केटली तेजीथी पतन थयुं छे ? केटलो भयानक नैतीक ह्रास थयो छे ! लोभ, क्रूरता, हिंसा तथा द्वेष केटलो वध्यो छे ! मानवजातिए केटलां दुःख झील्या छे ? एक बाजू अनंत मानवतानु अंतरहित दुःख, दीनता, यातनाओ, दुर्गुणोनी सृष्टि, सद्गुणोनो ह्रास, रोग, पिशाचोने पण ध्रुजावनारी स्त्री-जातिनी यातनाओ अन्न-दाता अने श्रम-जीवी वर्गनुं करुण-क्रंदन अने बीजी बाजू मुठीभर लोकोना हाथमां सत्ता, धन, जमीन, तथा सुखोपभोगना बधां साधनो, आ छे दुनियानु चित्र !!!

युद्धना मेदानमां सैनिक मरेला पड्या छे, कांईक घायल थईने बराडा पाडे छे. कोई अतीव पीडा थी सीस्कारे छे तेथी गीध, शीयाळ अने कुतराओने शुं ! ते तो तेना मांस उपर तुटी पडे छे. मांसना टुकडा तोडी तोडीने खाय छे.

दुनियाना शासक-वर्गने पण आवी रीते मानवताना दुःख दैन्यथी एनी यातनाओथी, एना नैतिक-पतनथी कोई मतलब नथी. सत्ता हाथमां टकी रहे एटलेथी मतलब छे. आ दुनियानु हुबहु चित्र छे !!!

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ईश्वरना दूत.

आवा भयानक संकटना समये दयालु परमात्मानी कृपाथी भारतमां अनेक महान् विभूतियोनो प्रादुर्भाव थयो.

स्वा. दयानंद, स्वा. विवेकानंद, लो. तिलक म. गांधी, गुरुदेव टागोर, योगी अरविंद, संत विनोबा, स्वा. रामतीर्थ तथा सरहदना गांधी इत्यादि नाम विषेश उल्लेखनीय छे.

भारतमां हजारो वर्षोमां जे कांई अद्वैतनी साधना थई, जे कांई विश्वहितने माटे तपस्या थयी, विश्वात्मैक्य साधीने जेमणे शाश्वत काळ सुधी टकी शकनारी संस्कृतिनु खातर अहींनी जमीनमां फेलावी दीधुं ए बधाना आ महापुरुषो साररूप हता.

एमणे भारतने अने दुनियाने हिंसा द्वेष, युद्ध अने संहारनी खाईमां पडीने नाशमांथी बचाववानो भव्य रास्तो बताव्यो.

भारतनी जनताने अंग्रेजोए निःशस्त्र करी दीधी हती. स्वतंत्र थवानो कोई उपाय एनी पासे न होतो. एने माटे दुनियाने अहिंसानो राह बतावता तथा ते राहथी भारतने आझाद करवा माटे मोहनदास करमचंद गांधीनो जन्म थयो.

लोभ तथा सत्ताना मदमां चूर ब्रिटिश सत्ताने तेमणे मानवीय न्यायनुं कर्तव्य बताव्युं, ज्यारे ते समज्या नहिं त्यारे तेमणे अंग्रेजोपर प्रहार कर्यावगर अहिंसा तथा आत्मबलिदानना बळपर देशने आझाद कर्यो.

गांधीजीए राष्ट्र-जीवनना दरेक क्षेत्रमां पोताना विचार राख्या. एनो संबंध सर्वेषां अविरोधेन तथा बधानो अभ्युदय अने निःश्रेयस साथे हतो. एनी विगतमा हुं नथी जतो.

संक्षेपमां कहेवुं होय तो तेने शासन तथा शोषण-मुक्त समाज-रचना कहेवाय. आने एमणे अहिंसक समाज-रचना अथवा सर्वोदय नाम आप्युं.

ग्रमोद्योग प्रधान ग्रामीण अर्थ-रचना, व्यक्तिगत मालकी थी मुक्त जमीन तथा संपत्ति, विकेंद्रित सत्ता अर्थात ग्राम-स्वराज्य व्यवस्था, हिंसक सेनाना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्थानपर शांतिसेना, बुनियादी शिक्षण अने शहेरोनो आधार गामडानुं शोषण नहिं पण पोषण होय आ तेमनी सर्वोदय विषेनी अति संक्षिप्त व्याख्या हती.

पोतानी अलौकिक तपस्या, सुझबुझ प्रतिभा तथा आत्मबळथी तेमणे आपणने अनेक अनर्थोथी बचाव्या अने राष्ट्रीय महासभा (कॉंग्रेस) मां जीव पुरीने देशने आझाद कर्यो.

कॉंग्रेसनी ध्येयच्युति

आझादीनी लडतने वखते कोंग्रेसनी गांधीजीना अनुशासननुं पालन कर्युं नहिं जेवुं ते चाहता हता. कोंग्रेसीओ लाचारीथी जेलमां तो जता हता परन्तु जेलनी अंदर पण ते गांधीजीए बतावेल नियमोनुं पालन करता न हता. थोडा लोको अपवाद रुपे हता. गांधीजी कहेता हता के एवा सेनापतिनी कल्पना करो जेना अनुशासनमां सेना नथी रहेती. शुं एवो सेनापति विजयी थई शके ? हिंसक सेनाने जेटला अनुशासननी जरूरत छे तेनाथी वधारे अहिंसक सेनाने छे.

तेओ गामडांना पुनरुद्धार माटे ७|| लाख गामोमां खासकरीने कॉंग्रेसीओ द्वारा रचनात्मक कार्य थाय ते चाहता हता. ए कहेता हता के रचनात्मक कामनी पूर्णता एज खरी आझादी छे. रचनात्मक कामने आपणे पूर्णताए पहोंचाडीए तो अंग्रेज अहींथी पोते खुशीथी चाल्या जशे. जेलमां जवानी आपणने जरुरत न पडे. ए कहेता हता के आपणे आपणा पापोना कारणे जेलमां जईये छीए. तेमणे एटले सुधी कह्युं हतुं के जे लोको गामडामां रचनात्मक कामोमां लाग्या छे तेओ सत्याग्रहमां अर्थात् जेल जावानी लडाईमां शामिल न थाय. परन्तु कोंग्रेसे रचनात्मक काम तरफ ध्यान न दीधुं. गांधीजी कहेता हता के कॉंग्रेस एक वादविवाद सभा छे. (Congress is a debating society) देशवासीओए पण तेने पुरेपुरो साथ आप्यो नही.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

असहयोग आन्दोलनमां देशवासीओए गांधीजीने पुरे पुरो साथ आप्यो होत तो तेज वखते देश आझाद थयी जात, पाकीस्तान थातज नहि, कारण के ते वखते ते सवालज न होतो.

सने ३०,-३२ के ४२ मां आंदोलन जो पूरा सातत्यथी चालत तो सरकार टुटी पडत अने देश आझाद थई जात. परंतु देशे पूर्ण आत्म-विश्वास तथा सातत्यनी साथे काम कर्युं नहिं एटले खंडीत आझादी मळीं अने आजे पण देशनी गरीब जनतानी परिस्थितिमां सुधारो थयो नहिं.

सने ४५-४६ मां देश एटलो निर्भय थई गयो हतो के अंग्रेज दंग थई गया. तेमने पुरो विश्वास थई गयो के हवे आपणुं राज्य अहीं नहि चाले.

भारतने छोडी जतां पहेलां भारतनें दुर्बळ करी नाखवा माटे अंग्रेजोए पोतानी कूटनीतिथी काम लीधुं. कोंग्रेसनी सामे एक जाळ बीछावी दीधी. हिंदुस्ताननना संकडो टुकडा थाय, स्वतंत्र राज्यो, पाकिस्तान तथा हिंदुस्तान अलग अलग थाय ते तेमनो व्यूह हतो.

ब्रिटिश सरकार भारतमां एक हरिजनस्तान थाय एम पण इच्छती हती. परंतु म. गांधीना आमरण-अनशनना कारणे ब्रिटिश सरकारनु धार्युं थयुं नहिं.

गांधीजी ए वातनें जाणी गया हता के पाकिस्तान थवाथी बंनेंनु अकल्याण थशे. बंनें देशो वच्चे हंमेशा संघर्ष चालु रहेशे अने बंने देशो हमेशा दुर्बल रहेशे. ए कहेता हता के पाकिस्तान कोई पण दृष्टीथी एक अव्यवहारीक वस्तु छे.

आनेंमाटे गांधीजीए कोंग्रेसने कोई पण हालतमां पाकिस्तान स्वीकार न करवानी सलाह दीधी. एमणे अंग्रेजोनें कह्युं "तमे लोको भारत छोडीनें चाल्या जाव, अमे भाई भाई आपसमां समजी लइशुं. झगडो तो तमारी हाजरीने कारणे छे, तमे हट्या के झगडो खतम. छतां पण तमे अमारो ठेको लेशो तो अमे हजु एक लडाइ लडी लेशुं. तमें अमरा मामलामां न पडो, झगडाने अमे जोई लेशुं.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

परंतु कोंग्रेसे गांधीजीनी जाण बहार ब्रिटिश सरकारथी समजुती करी लीधी. पाकीस्तान कबूल करी लीधुं. ते वखते गांधीजी हिन्दू-मुसलमानोनुं हुल्लड शांत करवा नोवाखाली गया हता. त्यां ज्यारे तेनें आ वातनी खबर पडी त्यारे तेनें एक जबरदस्त धक्को लाग्यो.

सीमाप्रांते आझादीनी लडाईमां भाग लीधो हतो. घणु बलिदान कर्युं हतुं. त्यांना नेता खाँ अब्दुल गफ्फार खांअे त्यांना हिंसक अनें क्रूर स्वभाववाळा पठाणोनें अहिंसक बनाव्यां हता. अंग्रेज कहेता हता के अहिंसक पठाण हिंसक पठाणथी वधु खतरनाक छे. सीमाप्रांतनी धारा-सभामां पण कोंग्रेसनी बहुमती हती. त्यां कोंग्रेसनुज मन्त्री-मण्डल हतुं. परन्तु सत्ताप्राप्तिमाटे कोंग्रेसे सीमाप्रांतनें धोखो दीधो. खां अब्दुल गफ्फारखांनी भाषामां कोंग्रेसे सीमाप्रांतनें वरुनें हवाले करी दीधो. पछी तो त्यां पाकीस्तानी क्रूरता वरसी पडी. सीमाप्रांतना गांधी तथा तेना भाईनें वर्षों सुधी जेलमां सडवुं पडयुं. पछी त्यां शुं शुं वीत्युं अनें कई हालतमां सीमाप्रांतमां मुस्लीम लीगनी बहुमती थई ए एक दर्दभरी घटना छे.

आझादीनी लडाई दरम्यान गांधीजी तथा कोंग्रेसना नेताओए ग्रामीण जनतानें अनेक आश्वासन दीधां हता. तेना छीनवायेला मानवीय अधिकार तेनें पुनः प्राप्त थशे. जमीन जोतनारानी थशे. जंगलनो कर रहेशे नहिं, ग्राम-स्वराज्य व्यवस्था थशे अनें जनतानें न्याय अनें शिक्षण मफत मळशे इत्यादि. गांधीजीनी आझादी आ कोटि कोटि अर्धनग्न अनें अर्धबुभुक्षित लोकोनें माटे हती. तेमणे गोळमेजी परिषदमां पण तेज वात कही हती. के मारुं स्वराज्य गरीबोनुं स्वराज्य हशे. मारा करोडो भूखे मरनारा भाईबहेनो माटे मारुं स्वराज्य हशे, ब्रिटिश शासननी शोषण-व्यवस्थानें कारणेज त्यां गरीबी छे. एनें माटे हुं त्यांथी ब्रिटिश सत्तानें हठाववा चाहु छुं.

सत्ता हाथमां आवतांज कोंग्रेस ग्रामीण जनतानें भूली गई. कोंग्रेसना विधानमां ग्रामीण जनतानें कोई स्वतंत्र स्थान मल्यु नहिं. संत विनोबानी भाषामां

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गामडानें झाडु लगाडवानुं स्वराज्य मल्यु. गाम गुलामना गुलामज रह्या. आझादी कोंग्रेसनें मळी गई.

संत विनोबाए आ हालतनें खुब योग्य शब्दोंमां व्यक्त करेल छे. तेओ कहें छे के अंग्रेजोना आव्या पहेलां देश गुलाम हतो, पण गामडा आझाद हता, अंग्रेजोना जमानामां देश पण गुलाम हतो, गामडां पण. आज देश आझाद छे, परन्तु गामडा गुलाम छे.

आझादीनी लडाईमां गामडांओए घणुं बलिदान आप्युं हतुं. कोंग्रेसना अधिवेशनोमां अन्न अनें द्रव्यनी सहायता करी हती. ना-करनी लडतमां पण भाग लीधो हतो, सनें ४२ नी सालमां तो गामडाओनें बुरी रीते बरबाद करवामां आव्यां हता. गामडाओए ए समये कोई पण नेतृत्व विना जबरजस्त सामूहिक आन्दोलन चलाव्यु हतुं जेनी आपणे कल्पना पण करी शकीए नही. केटलाक जील्लांमां जनतानी सरकार चालती हती, बिटिश हुकूमत खतम थई हती. गामना लोकोए असाधारण निर्भयता तथा बलिदाननो परीचय कराव्यो हतो. एना बदलामां एनें शु मळ्युं ? वधारे शोषण अनें वधारे दमन.

स्वातन्त्र्य संग्राममां एवा हजारोए भाग लीधो हतो के जेओ गांधीजीना स्वराज्य संबंधी महान् आदर्शो अनें स्वप्नोथी प्रेरित तथा आकर्षित थया हता. अनें जेमने कोंग्रेस जोडे कोई संबंध न हतो. एओ एवा हिंदनुं दर्शन चाहता हता के जेनुं चित्र गांधीजी खेंच्या करता हता. आमांना घणा तो गाममां रहीनें स्वतंत्रपणे रचनात्मक काम करता हता. एवा पण घणा लोको हता के जेओ न तो कांग्रेसीओ हता न रचनात्मक काम करता हता. पण तेओ समय समय पर आंदोलनमां भाग लई जेल जता. ज्यारे कोंग्रेसे गांधीजीनी संपूर्ण उपेक्षा करी अनें एना माथा उपर पश्चिमनुं भूत सवार थई गयुं त्यारे आ वर्गना लोकोनें बहु मोटी निराशा थई गई.

आ प्रकारे कॉंग्रेसे गांधीजी, सीमाप्रांत, ग्रामीण जनता अनें कॉंग्रेसेतर हजारो कार्यकरोंनें धोरखो आप्यो.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गांधीजीनुं भव्य स्वप्न

गांधीजी चाहता हता के भारतना स्वतंत्र थतांज कोंग्रेस सत्ता हाथमां न ले अने लोकसेवक संघमां फेरवाई जाय. पोतानी जमीन तथा संपत्ति गामडाने अर्पण करीने गामडांनी सेवा करे, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक समानता लावनारा रचनात्मक काममा लागी जाय.

जे संस्थाए वर्षों सुधी कष्ट सहन करीने देशने गुलामीना पंजामाथी छोडाव्या हतो तेज संस्था सत्ता हाथमां न लेतां दबायेला शोषित अने उत्पीडित वर्गनी निरभिमानी थयीने तन, मन, धनथी सेवा करत तो ते एक जबरजस्त नैतिक शक्ति बनी जात. कदाच आखा जगत्मां तो एक अद्वितीय अहिंसक शक्ति बनी जात. आ शक्ति आखी दुनियानुं मार्गदर्शन करी शकत. अने दुनियाने द्वेष, हिंसा, तथा युद्धनी ज्वाळाथी बचावी शकत. दुनियाने एवी एक नैतिक शक्तिनी नितांत जरुरत हती. आ शक्ति भारत सरकार उपर नैतिक नियंत्रण राखीने तेने साची दिशामां वाळी शकत. भारत सेना न राखत तेनी अर्थ-व्यवस्था ग्राम-प्रधान होत, सत्ता विकेन्द्रित होत तो गांधीजीनुं बीजुं स्वप्न साकार थात.

गांधीजी कहेता हता के हुं भारतमां एक नवो युग लाववा चाहुं छुं. जो कोंग्रेस सेवा संस्था थात तो भारतमा एक नवा युगनो आरंभ थात. सन ४५-४६ मां भारतनी आम-जनतानो मनोभाव पण एवा परिवर्तनमाटे घणोबधो अनुकूळ हतो. गांधीजीना जबरजस्त आत्मबळ, त्याग, तपस्या तेनुं स्वप्न तेना आखा राष्ट्र उपरनो प्रभाव तेनी अनोखी अहिंसक लडाई वगैरे कारणोथी आवो मनोभाव पेदा थयो हतो.

बीजा देशोमां पण आझादीनी लडाई चाली. देश आझाद पण थया, परंतु त्यां आमजनताना हृदयमां आवो अभूतपूर्व मनोभाव पेदा थयो न होतो. त्यांनी लडाईओ हिंसक हती, भारत अने आखा विश्वनुं हित साधवानी एक अलौकिक तक कोंग्रेसे खोई नाखी.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आथी अने हिन्दु-मुसलमानोना हुल्लडथी गांधीजीने तीव्र वेदना थती हती. ते १२५ वर्ष जीववा इच्छता हता. परंतु आझादीनी पछी तरतज ईश्वरथी मृत्युनी चाहना करवा लाग्या. ईश्वरे पण तेनी चाहना पुरी करी दीधी. जेवुं मृत्यु ते चाहता हता तेवुं ज मृत्यु तेने प्राप्त थयुं तेनी आकांक्षा अनुसार अंतिम समये तेना हाथ हत्यारा सामे जोडाया अने मोढेथी निकळ्युं "हे राम"

भारत नी बुनिवाद्

भारतनुं सौथी प्राचीन साहित्य वेद छे. तेनो सार छे उपनिषद्. ते ब्रह्मविद्या संबंधी उत्तम साहित्य छे. दुनियाभरना विचारशील लोकोए आ साहित्यनी मुक्त-कंठे प्रशंसा करी छे. दुनियाभरनी भाषामां तेनो अनुवाद थयो छे. ब्रह्मविद्या अने जीवमात्रनी एकताना आधार पर आपणा समाज तथा संस्कृतिनी रचना थई छे. आ देशे क्यारे पण विदेशो उपर आक्रमण कर्युं नथी. आपणा ग्रामोद्योग, सर्व-संमतिथी चालनारी आपणी ग्राम-स्वराज्य व्यवस्था, मांसाहार-निषेध, गोमाताने समाजना अर्थ-रचनामां स्थान मलवुं, इदं न मम, कृष्णार्पणमस्तु इत्यादि मंत्र पुरे पुरा आपणी आध्यात्मिक संस्कृतिना सूचक छे. ए कारणे अहीं गांधीजीनी अहिंसक लडत चाली शकी अने संत विनोबाजीए लोकोने समजाव्या मात्रथी लाखो एकर जमीन मली गई. आझादी पछी आज आधारपर देशनी पुनर्रचना, भले काळ अनुसार थोडा फेरफार साथे थई होत तो देशमा अनंत अनर्थ पेदा न थात, आखा देशनो सर्वांगीण विकास थई जात, देशनी सुरत बदली जात.

हजार वर्षनी गुलामी दरम्यान आपणी समाजरूपी इमारतमां अनेक दोष आवी गया हता. ठेकठेकाणे एनी भिंतो पडवा लागी हती. क्यांक तो खंडेर मात्र हता, क्यांक जंगली जनावरोनो प्रवेश पण थयो हतो. पश्चिमनुं अनुकरण अने इंग्रजी शासनना कारणे अहींनी समाज-व्यवस्था छिन्नभिन्न थई गई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हती. आझादी पछी राष्ट्र अने गामडाओनुं पुनर्निर्माण तथा स्त्री-जातिनी उन्नति आ बे काम विशेष करीने हाथमां लेवा जेवां हता.

भुलुं पडेलुं भारत

पाश्चात्य शिक्षणथी अभिभूत थयेली कोंग्रेसे आ बधी वातोनो जरा पण विचार कर्या वगर पश्चिमनु आंधळुं अनुकरण शरू करी दीधुं. गामडाओनी संपूर्ण उपेक्षा थई. उद्योगीकरणने पहेलु स्थान मल्युं. अन्न-स्वावलंबननी तरफ पण ध्यान आप्युं नहिं. आ देशनी महान् विभूतियोंना विचारोंनी संपूर्ण अवहेल्ना थयी. दुनियानी नजरमां जे महापुरुषोए आ देशनी इज्जत वधारी हती तेमना विचारोने भारतना विधानमां कंई स्थान मल्युं नहिं. आ बधा मूर्ख मान्या गया. विदेशोथी अक्कलनी आयात थई. अंग्रेजोनुं जे शासन-तंत्र हतुं, शिक्षण-व्यवस्था हती जे खोटा खर्चाओ भपकाओ, खोटी रुबाबी हती ते बधी जेमने तेम चालु रही. अंग्रेजी हकूमतना समयना दोष हता ते वधी गया, गुणमात्र दुर थया. परिणाम शुं आव्युं?

गरीबोनी गरीबी वधी. अमीरोनी अमीरी वधी. नोकरशाही वधु उन्मत्त थई गई. रिश्वतखोरी जगजाहेर चालवा लागी. चुंटणी पैसा तथा चालाकीना जोरपर चालवावाळुं नाटक बनी गयुं. सत्ताकांक्षी तथा मोजशोखमां मस्त मन्त्रीओ उपरथी जनतानो विश्वास उडी गयो. चुंटणी थया बाद चुंटाई आवेला प्रतिनिधीयोनी खरीदबिक्री थवा लागी, एकबीजानु खून करवुं तथा भगाडवानी पण शरुआत थई. पिशाचोने न सुजनारी अक्कल आ राजनीतिज्ञोने सुजवा लागी, आझादीनी लडत दरम्यान आखा देशमां जेटलीवार गोळीओ तथा लाठीओ चाली हती तेथी घणी वधारे वार आझादीना आ चोवीस वर्षोमां चाली. देशमां विखवाद अने गद्दारीनी सुरंग लागी गई. पाकीस्ताननी अवळ चंडाई वधी गई. त्यांथी लाखो शरणार्थी अहीं आव्या. चीन तथा पाकीस्ताने हुमला कर्या. पहेलां जेम राजाओ अहीं आपसमां

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लडता हता तेवी रीते हवे पक्षो आपसमां लडवा लाग्या. अनेक प्रश्नोने कारणे तोडफोड तथा दंगा थया. हडतालो थई. राजनीतिज्ञोए विश्व-विद्यालयमां प्रवेश कर्यो. विश्व-विद्यालय राजनीतिना आखाडा बनी गया. अंधारी रातमां मार्ग-दर्शक विना भटकवावाला जेवी भारतनी हालत थयी.

आवा वखतमां फरी एक वार भारतपर ईश्वरनो अनुग्रह थयो. तेलंगाणामां साम्यवादीओ तथा सरकार वच्चे लडाई शरू थई. बीचारी गरीब जनता आ बेनी वच्चे भीसाणी. त्यां पंदर करोड रुपया खर्च करीने भारत सरकारे सेना वडे शांति स्थापवा कोशिश करी. त्यानी बेजमीन जनताने जमीन देवाने बदले बंदूकधारी सेनानी भेट करी. त्रण वर्ष सुधी सेनाए गरीबोने सताव्या. आवा काम कोई उन्मत्त विदेशी सरकार करत तो लोकोने आश्चर्य थात नहि, परन्तु आ दमन कार्य पोतेज कोंग्रेसी सरकारे कर्युं.

आवा समयमां त्यां संत विनोबाजी पहोंची गया. जेम गांधीजीने दक्षिण आफ्रिकामां अहिंसक प्रतिकारनी प्रक्रिया सुझी हती तेम संत विनोबाजीने त्यां भूमि समस्यानो प्रश्न हल करवानो अहिंसक मार्ग मली गयो. सत्तर अढार वर्ष तेनी अखंड पदयात्रा आ निमित्ते चाली. ते आंदोलने आरोहणनुं रूप लीधुं. भूदान, ग्रामदान, संपत्ति दान, जीवनदान, जिल्लादान, प्रांतदान आप्रमाणे आ आरोहण उत्तरोत्तर उपर चढतुं गयुं. जो भारतना बधा पक्षो अने सरकार आ आरोहणने यशस्वी बनाववामां पोतानी पुरी ताकात लगावी देत तो देशनी शिकल आज सुधी बदली गई होत.

संत विनोबाजीए मैसूर प्रांतना येलवाल नामना स्थाने देशनां बधां पक्षो अने नेताओने भूदान-ग्रामदान आंदोलन बाबत विचार-विनिमय करवा बोलाव्या हता. बधाए सर्व-सम्मतिथी एलान कर्युं के भूदान-ग्रामदान आंदोलन देशने बचावनारुं छे. त्यारे पंडित नेहरू पण त्यां हता. तो पण ए बधा पक्षोए जेओ देशनी सेवा करवानो दावो करे छे आ कार्यक्रम उपाड्यो नहि. जे कार्यक्रम बाबत कोईने कोई प्रकारनो मतभेद न होतो जेमां बधा एकमत हता ते कार्यक्रम ते बधा पक्षोए केम उपाडयो नहिं ? कारण के तेमां सत्ता प्राप्तिनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कोई शक्यता न होती. गामगाम घुमवानी तकलीफ उठाववी पडत, आ पक्षोने प्रजा हित नहिं, सत्ता जोईती हती. संत विनोबा ग्रामदान आंदोलनने विदेशी आक्रमणो थी बचवानो मुख्य मोर्चो समजता हता. ते आने major defence अने Defence measure बंने कहेता हता. संत विनोबा सतर अढार वर्ष पेदल गाम गाम घूम्या, टाढ, तडको, वर्षा कोईनी पण तेणे परवाह करी नहिं. थोडाक अपवाद छोडी दईए तो तेनी पदयात्रा अखंड चाली परन्तु सरकार, व्यापारी तथा जमीनना मालिक जाग्या नही. भारतमां आध्यात्मिक क्रांति करवानो बीजो मोको, पूंजीपतिओ, भूमालिको तथा सत्ताधारिओनी उपेक्षा अनें अवहेलनानें कारणे एकवार फरी थी खोवायी गयो.

आझादीनी प्राप्तिमाटे गांधीजीनो शरु केरेलो अहिंसक संग्राम दुनियाना इतिहासमां एक अद्वितीय स्थान धरावे छे. एज प्रमाणे भूमि–समस्यानो अहिंसक ढंगथी निवेडो लाववा सतर अढार वर्ष सुधी अखंड चालेली संत विनोबानी पदयात्रा पण दुनियानां इतिहासमां अनोखु स्थान पामशे. आपणी जीवमात्रनी एकता, सर्वेषां अविरोधेन तथा सर्व–भूत–हिते रताः वाळी संस्कृतिना आधारपर शोषण अनें शासनमुक्त समाज रचना करवानी तक आपणे खोई. विश्वनें द्वेष, हिंसा, तधा विनाशनी खाईमां पडीनें चुरेचुर थवाथी बचाववानी ईश्वर–प्रदत्त बे बे तको आपणे खोई ते माटे उंडो पश्चात्ताप करवानो समय आव्यो छे.

महापुरुषोनी दृष्टिमां भारत अने तेमनी चेतवणीओ

ज्यारे आखी दुनिया भारतनें घेटां बकरांनो देश समजती हती त्यारे स्वा. विवेकानंदे विदेशोमां भ्रमण करीने दुनियानी नजरमां भारतनी इज्जत वधारी. ज्यारे तेओ भारतमां घूमता हता त्यारे तेनें कोई पुछतुं न होतुं, पण ज्यारे तेओ अमेरिका गया त्यां तेमणे व्याख्यान दीधुं, त्यांना लोकोए

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्वामीजीनो महान् आदर कर्यो त्यारे भारतवासीओना आंख अने कान उघडी गया. त्यांथी ज्यारे ते अहीं आव्या त्यारे अहींना राजाओए एमने रथमां बेसाडी पोते रथ खेंच्यो. आ हकीकत आपणी गुलामी मनोवृत्तिनी सुचक छे. तेओना थोडा उद्गार अहीं आपुं छुं.

"समस्त संसार आपणी मातृभूमिनुं महान् ऋणी छे. कोई पण देशने लो, आ जगतमां एक पण जाति एवी नथी के जेनुं संसार आटलुं ऋणी होय जेटलुं के ते अहींना धैर्यशील अने विनम्र हिन्दुओनी छे."

"अनेकोनेमाटे भारतीय-विचार, भारतीय रीति-रिवाज, भारतीय-दर्शन, भारतीय साहित्य प्रथम दृष्टिए घृणास्पद प्रतीत थाय छे. पण कदाच ते प्रयत्न करे वांचे तथा आ विचारोमां निहित महान तत्त्वोथी परिचित थई जाय तो परिणाम स्वरूप एमांथी ९९ प्रतिशत आनंदथी विभोर थईने एना उपर मुग्ध थई जशे."

"मारी वात पर विश्वास करो, बीजा देशोमां धर्मनी केवळ चर्चाज थाय छे. पण एवा धार्मिक पुरुष के जेमणे धर्मने पोताना जीवनमां परिणत कर्यो छे अने जे स्वयं साधक छे ते केवळ भारतमांज छे."

"हुं कहुं छुं के हजुपण आपणी पासे कंई एवी वातो छे के जेनुं शिक्षण आपने संसारने आपी शकीए. एज कारण छे के सेंकडो वर्ष सुधी अत्याचारोंने सहीने लगभग हजारवर्ष सुधी विदेशी शासनमां रहीने अने विदेशियो द्वारा पीडित थईने पण आ देश आज सुधी जीवित रह्यो छे. एनुं हजुपण अस्तित्वमां रहेवानुं कारण ए छे के ते सदैव अने हजुपण ईश्वरनो आधार लईने बेठेल छे. तथा धर्म अने आध्यात्मिकताना अमूल्य भंडारनु अनुसरण करतु आव्युं छे."

"आपणां आ देशमां हजु पण धर्म अने आध्यात्मिकता विद्यमान छे. मानो के एवो प्रवाह छे जेणे अबाध गतिथी वहेतां आ समस्त विश्वने पोताना प्रवाहथी पोषण आपीने पाश्चात्य तथा अन्य देशोचे नवजीवन तथा नवशक्ति प्रदान करवानी रहेशे. राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओ तथा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सामाजिक कपटोना कारणे आ बधा देश आज अर्ध–मृत थई गया छे. पतननी चरम सीमापर पहोंची चुक्या छे, तेमा अराजकता छवाई गई छे."

"पण याद राखो यदि तमे आ आध्यात्मिकतानो त्याग करी देशो अने आने एक बाजु मुकीने पश्चिमनी जडवाद पूर्ण सभ्यतानी पाछळ पाछळ दोडशो तो परिणाम ए आवशे के त्रण पेढीयोमां तमे एक मृत जाति बनी जशो कारण के आथी राष्ट्रनीं केड टुटी जशे. राष्ट्रनो ए पायो जेना पर आनु निर्माण थयुं छे ते नीचे झुकी पडशे अने एनुं फळ सर्वांगीण विनाश थशे."

"भौतिक शक्तिनु प्रत्यक्ष केन्द्र युरोप जो आज पोतानी स्थितिमां परिवर्तन करवामां सतर्क नहि थाय अगर ते पोतानो आदर्श नहि बदले अनें पोताना जीवननें आध्यात्मिकतापर आधारित नहि करे तो पचास वर्षोनी अंदर ते नष्टभ्रष्ट थईनें धूळमां मळी जशे. अनें ते स्थितीमां तेनें बचाववाळुं कोई होय तो ते उपनिषदोनो धर्म छे."

"आपणा घमंडी पूर्वज, साहुकार आपणा देशनी ग्रामीण जनतानें पोताना पग तळे त्यां सुधी कुचलता रह्या ज्यां सुधी के ते निस्सहाय न थई गया. तेटली हद सुधी के ते बिचारा गरीब भूली न गया के ते मनुष्य छे. ते शताब्दियो सुधी केवळ लाकडा कापवा अनें पाणी भरवा एवी रीते विवश करी दीधा के तेनें विश्वास थई गयो के ते गुलामना रूपमां जनम्या छे. लाकडा कापवा तथा पाणी भरवा माटेज पेदा थई गया छे."

"उपनिषदोनुं सत्य तमारी सामे छे, एनों स्वीकार करो, तेनें अनुसार तमारु जीवन बनाओ अनें तेनाथीज शीघ्र भारतनो उद्धार थशे"

"**मारा मत मुजब ग्रामीण जनतानी उपेक्षा ए एक मोटु राष्ट्रीय पाप छे. अने तेज एक कारण** छे जेनाथी आपणु पतन थयुं छे. गमे तेटलुं राजकारण ते समय सुधी उपयोगी नहिं थाय ज्यांसुधी ग्रामीण जनता फरीथी सारी रीते सुशिक्षित न थई जाय, तेनें सारु भोजन फरीथी प्राप्त न थाय, तेनी सारी देखभाल न थाय."

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"भविष्यमां शुं थनारुं छे ते मने नथी देखातुं अने न मने जोवानी परवा छे. पण जे प्रकारे पोतानी सामे हुं जीवन प्रत्यक्ष रूपमां जोई रह्यो छुं तेज प्रकारे मारा मनश्चक्षुनी सामे मने एक दृश्य स्पष्ट रूपथी देखाय छे. के मारी आ प्राचीन मातृभूमि फरीथी जागी उठी छे. ते सिंहासनपर बेठी छे. तेमां नवशक्तिनो संचार थयो छे अने ते पहेलां करतां अधिक गौरवान्वित थई गई छे. संसारनी सामे शांती अने कल्याणनी मंगलमय वाणीथी एना गौरवनी घोषणा करो."

"आखुं पश्चिम एक ज्वाळामुखीना मुख उपर बेठेलुं छे. जे आवती काले पण फूटी शके छे अने टुकडे टुकडा थई शके छे."

"हुं तमारा बधाथी ए चाहुं छुं के तमे आत्म-प्रतिष्ठा, दलबंदी, अने ईर्ष्याने सदाने माटे छोडी दो, तमारे पृथ्वीमातानी माफक सहनशील थवुं जोईए. जो तमे आ गुण प्राप्त करी शको तो संसार तमारा पग पूजशे."

"हे अमृततत्त्वना पुत्रो! मारा देशवासीयो! आपणी आ राष्ट्रनौका पोतानी संस्कृतिने साथे लईने आखा जगतने समृद्ध करती करती युगोथी तरी रही छे. असंख्य उज्ज्वल सदियोथी आपणी आ राष्ट्रनौका संसार-सागरमां घुमी रही छे. अने लाखो जीवोने भवसागरनी पेली पार लई जईने बधा दुःखोथी मुक्त करी रही छे. आज तमारी भूलथी के बीजा कोई कारणथी एमां काणुं पडी गयुं छे. अने तेने नुकसान थयुं छे. हवे तेमां बेठेला तमे बधां लोको शुं करशो? शुं तमें आ राष्ट्रनौकाने गाळो आपशो? के आपसमां झगडो करशो? शुं तमे बधा भेगा थईने ते काणुं बंध करवाना काममां पोतानी पुरी ताकात थी नहि लागो?"

"भाईओ! चालो आपणे बधा काममां लागी जईए, आ सुवानो समय नथी. भारतना उद्धारनो आधार आपणा कामनी उपर छे. भारतमाता तैयार थईने राह जोई रही छे. ते फकत सुई रही छे. उठो, जागो अने आ आपणी माताने फरीथी जागेली, पहेलांथी वधारे प्रतापी थई ने पोताना सिंहासन पर बेठेली निहाळो."

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"हवे रोवुं बंध करीनें तमारा पोताना पगपर उभा रहो अनें मर्द बनो, मनुष्यनें मर्द अने वीर बनावे एवा धर्मनी आपणनें जरुरत छे. दरेक प्रकारथी मर्द बनावनारा शिक्षणनी आपणनें जरूरत छे. आ सत्यनी कसोटी छे. जे कंई तमनें शारीरिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक दृष्टिथी दुर्बल बनावे तेनें जहेर समजीनें दुर फेंकी दो. तेमा कंई ज्ञान होई शके नहि, ते तो झुठुं छे. सत्य एटले शक्ति, सत्य एटले पवित्रता, सत्य एटले पूर्ण-ज्ञान. सत्यतो प्रकाश, शक्ती अनें स्फूर्ति प्रदान करे."

"गुलामो माटे स्वाभाविक एवी ईर्ष्या आपणा राष्ट्रीय चारित्र्यनुं कलंक छे. एवी ईर्ष्यानें कारणे सर्व शक्तिमान् ईश्वर आपणा माटे कंई करी शक्या नथी."

"आपणे ग्रामीण वर्गनी एटलीज सेवा करवी छे—तेनें शिक्षण आपवानुं छे अने तेना लुप्त थयेला व्यक्तित्वनो फरीथी विकास करवो छे. एवाज सामान्य लोको आपणा मंदिर अनें बंगला बांधे छे अनें आपणा शिक्षणनें माटे पैसा आपे छे परंतु बदलामां एमनें आपणी लात मले छे. ते लोको आपणा गुलाम जेवा थई गया छे. जो आपणे भारतनो उद्धार करवो होय तो तेनें माटे काम करवुं पडशे."

"अपणी पासे बुद्धी छे. परंतु कार्यकरो नथी. आपणी पासे वेदांतना सिद्धांत छे. परंतु तेनें अमलमां लाववानी तैयारी नथी. अपणा ग्रंथोमां भले सार्वत्रिक समानताना सिद्धांतनु निरुपण थयुं होय परंतु वहेवारमां तो आपणे मोटो भेद उभो करीए छीए, स्वार्थ अनें आसक्ति छोडीनें उत्तम कार्य करवानो बोध भारतमांज अपायो छे. परंतु वहेवारमां आपणे अत्यंत क्रुर अनें निष्ठुर छीए. अने आपणे लोहीमांसना टुकडा जेवा देहना सिवाय बीजी कोई चीजनो विचारज नथी करता."

"हे भाग्यवान भारतवासीओ! मनें पूर्ण विश्वास छे के जो तमो साचा हृदयथी भारतना करोडोना जनसमुदायनें प्यार करशो तो ते पुनः जिवित अनें जागृत थई शके छे. आजे भारतना करोडो लोको अभागी, धन-हीन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बुद्धि-हीन, अशिक्षित, पतित अने भूख्या होईने पोतानी ईर्ष्या, द्वेष अने कलहथी नष्ट थता जाय छे. ज्यारे आ देशना हजारो विशाल हृदयना नरनारी उदात्त भावनाओथी प्रेराईने जीवनना सुखोपभोगनी तमाम तृष्णानो त्याग करी दारिद्य तथा अज्ञानना महासागरमां डूबता करोडो देशवासीओना उद्धार माटे कटिबद्ध थईने पोतानो पूर्ण पुरुषार्थ आ महाकार्यमां लगाडशे त्यारेज भारतवर्ष जागृत अने चैतन्यपूर्ण थशे."

"तमारे कोई विदेशी सहायता उपर आधार न राखवो जोईए. व्यक्ति होय के राष्ट्र बधाने स्वावलंबी बनवुं जोईए. तेनुं नाम देशप्रेम."

"कोई पण काम माटे तमे तमारुं पोतानु बलिदान करी शको त्यारे तमे नेता बनी शको. परंतु आपणे बधाने कोई पण प्रकारनुं बलिदान कर्यावगर नेता बनवुं छे. परिणाम शून्य आवे छे. अने आपणने कोई सांभळतुं नथी."

"हे भारतवासियो! तुं भूलतो नहि के स्त्रीत्वनो तारो आदर्श सीता सावित्री अने दमयंती छे. तुं भूलतो नहिं के तारो उपास्य-देव महान तपस्वी-योनो तपस्वी सर्वस्व त्यागी उमापति शंकर छे. तुं भूलतो नहिं के तारूं लग्न, तारी संपत्ति, तारूं जीवन, इन्द्रियोना भोग विलासने माटे नथी, तारा व्यक्तिगत अंगत सुखने माटे नथी; तूं भूलतो नहि के तारो जन्म जगदम्बानी वेदी पर बलिदान थवा माटे थयो छेः तुं भूलतो नहि के तारी समाज-व्यवस्था, अनंत विश्वव्यापी मातृत्वनुं प्रतिबिंब मात्र छेः तुं भूलतो नहि के भारतनो नीचे पडेलो वर्ग अज्ञानी भारतवासी, गरीब भारतवासी, अभण भारतवासी, भारतनो चमार, अने भंगी सुद्धां-तारा लोहीनां सगांओ छे, बंधुओ छे; हे वीर! तुं बहादुर बन. हिंमतवान था अने गौरव ले के तुं भारतवासी छे अने गर्वपूर्वक गर्जना कर के 'हुं भारतवासी छुं' भारतनुं कल्याण ए मारूं कल्याण छे अने अहोरात्र प्रार्थना कर के, हे गौरीपते! हे जगजननी अंबे! तुं मने मनुष्यत्त्व आप. हे सामर्थ्यदायिनी माता! मारी निर्बळतानो नाश कर, मारी कायरताने दूर हठाव अने मने मर्द बनाव!"

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"शुं तमोने खेद थाय छे? शुं तमोने आ वातनो खेद थाय छे के देवताओ अने ऋषिओना लाखो वंशज आज पशुवत् थई गया छे? शुं तमोने आ वात उपर दुःख थाय छे के लाखो मनुष्य आज भूखनी ज्वाळामां तडपी रह्या छे अने सदीयोथी तडपे छे? शुं तमे अनुभव करो छो के अज्ञानता सघन मेघनी माफक आ देश उपर छवाई गई छे? शुं अनाथी तमे तडफडो छो? शुं आथी तमारी नींदर उडी जाय छे? शुं आ भावना तमारी नसोमांथी वहेती तमारा हृदयना धडकारनी साथे एकरूप थाती तमारा लोहीमां मळी छे? शुं एणे तमने बेचेन करी मुक्या छे? सर्वनाशना दुःखनी आ भावनाथी शुं तमे बेचेन छो? देशभक्त थवानी प्रथम आज सीडी छे. पहेली ज सींडी.

"रे हिन्द! अहिं तने मोटो भय छे." पश्चिमनी नकल करवाना मोहे तारां बालुडांओ पर एवी पकड जमावी छे के शुं सारुं अने शुं खराब ए हवे विचार, निर्णयशक्ति, विवेक के शास्त्रोने जोईने नक्की नथी थतुं. जे रीतभात अने विचार गोरा लोको वखाणे अने तेमने गमे ते सारा छे. तेओ जेना तरफ अणगमो व्यक्त करे ते खराब. हाय! आना करतां मूर्खतानो वधारे सचोट पुरावो शो जोईए? बीजाओना अवाजनी हाजीहा करवाथी, बीजाओ उपर आधार राखवाथी, बीजाओनी आंधळी नकल करवाथी तुं संस्कृति अने महानतनुं शिखर सर करी शकीश के? शुं तमे पोताना आ लज्जाजनक कायरताना साधनोथी आ स्वातंत्र्य पामी शको छो के जे केवळ साहसी अने धीरवीरोने माटेज प्राप्य छे?"

"शुं हिंद मरी जशे? तो दुनियामांथी बधुं अध्यात्म, नैतिक परिपूर्णता, धर्ममाटेनी हृदयपूर्वकनी मीठी लागणी खतम थई जशे. अने एनी जग्याए बिलास अने आरामनी जोडी राजा राणीनी माफक सत्तास्थाने बेसशे जेमां पैसो एमनो पुजारी हशे, दगाबाजी, हिंसा अने स्पर्धा तेमनी विधिओ हशे अने मानव-आत्मा एनुं बलि. आवी वस्तु क्यारे पण बनी न शके."

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"हिंद उंचे उठशे पशुबळथी नहि पण आत्मबळथी, संहारलीलाथी नहि पण प्रेम अनें शांतीकार्यथी जे संन्यासीनो धर्म छे. तमारी आत्मशक्तिने ओळखो जे तमनें भूख-तरस, ठंडी-गरमी सहन करवा शक्तिमान बनावशे. आरामदायी घरोमां जिंदगीनी तमाम सुखसगवडो वडे घेराईनें बेसी धर्मनी वातो करवी ते बीजा प्रदेशो माटे भले ठीक गणाय, पण हिंदनें सत्यनी अनोखी सूझ छे. जे ढोंगने पीछानी ले छे. तमारे त्याग करवोज रह्यो. महान् बनो, कोई पण महान् कार्य त्याग बिना करवुं शक्य नथी."

"माटे ३० करोड लोको जे रोज नीचे अनें नीचे डूबता जाय छे तेमनें ऊंचे लाववा सारु तमारी पूर्ण जिंदगी समर्पित करवानी प्रतिज्ञा लई लो."

म. गांधीजीए पण आजप्रमाणे विचार प्रगट कर्या छे. थोडा वधारे अनें विशद रूपथी एना उद्गारोनुं उद्धरण अहीं नथी आपतो. एनी धरपकड थया पछी अदालतमां आपेलुं एक बयान अहीं आपुं छुं.

हिंदना अर्ध-भूख्या लोको धीरे धीरे केवी रीते मृतप्राय बनें छे ते शहेरवासीओ शुं जाणे ? तेओ शुं जाणे के तेमनी क्षुद्र सुख–सगवडो विदेशी शोषणखोरना माटे तेओ जे काम करे छे तेनी दलाली रूप छे ? अनें ते दलाली तथा नफो जनता पासेथी चूसीनें कमाववामां आवे छे ? तेओ शुं जाणे के ब्रिटिश हिंदमां कायदावडे स्थपायेली सरकार जनताना उपरोक्त शोषणमाटे चलाववामां आवे छे ? गामडाओमां प्रत्यक्ष जोवा मळतां हाडपिंजरोना कोई आंकडाओनी इन्द्रजाल अनें गोलमाल छुपावी नहि शके. मनें आ वातमां कोई प्रकारनी शंका नथी के जो ईश्वर होय तो इंग्लैंड अनें हिन्दना शहेरवासीओनें मानवजाति सामेना आ अपराधनो–जे कदाच इतिहासमां अद्वितीय छे–जवाब आपवो पडशे.

गुरुदेव टागोरे ग्रामीण वर्गनें सर्व–उपेक्षित तथा सर्व–तिरस्कृत वर्ग कह्यो हतो. आ बे शब्द आपणे आपणा अन्न–दाता वर्गनी साथे केवो कठोर अनें अन्यायपूर्ण व्यवहार करीए छीए ते बतावे छे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मुक्तिनी राह

देश आझाद थयो. अंग्रेजी राज्य चाल्युं गयुं. पण गांधीजीना उपरोक्त बयानमां फरक पड्यो होय एवी परिस्थिति हजु पैदा थई नथी.

आपणे पश्चिमनी पाछळ गांडा थई शकीए छीए. दरेक वातमां तेनी नकल करी शकीये छीए. पण हिंसा शक्तिमां आपणे एमनी बरोबरी सो वर्षमां पण नहि करी शकीए. मानी लो के हिंसा अने क्रूरतामां तेनाथी पण आगळ वधी शकीये तो हिंसा अने विनाशनी आगमां मानवजाति बळीने भस्म थई जशे.

कोई घरमां झगडा थई जाय तो वधु समजदार जे हशे ते लडाई पताववानुं काम करशे. जे वधु समजदार छे ते जो झगडामां पडे के तमाशो जोता रहे तो घर रहेवा लायक न रहे. गाममां पण जो बे दळ बनी जाय अने लाठी बंदुकथी लडवा मांडे तो समजदारोए पोतानो जीव आपीने पण लडाई बंध कराववी जोईए. जो समजदार पण मगज गुमावी मेदानमां उतरे तो गाम स्मशान बनी जाय. अने जो कोई बची पण जाय तो तेने शांति मळवानी नथी.

भारतवासीओ ! विचार करो, शुं आ समये आपणा देशमां अने दुनियामां पेदा थयेला महापुरुषो भारत पासे आ वातनी आशा नथी राखता के भारत दुनियानी सामे वीरोनी अहिंसानो आदर्श रजु करशे ? शुं भारतनी संस्कृति अने साहित्य आवी प्रेरणा नथी आपतां ?

शुं हिंसा, लुंट, लुच्चाई तथा अन्यायना आधार उपर उभी करेली समाजरचनामांथी वीरोनी क्रियाशील अहिंसानो जन्म थई शके छे ? अहीं अनेक सत्-पुरुषोए तपस्या करी छे, ते शुं व्यर्थ जशे ?

आज बंगला देशमां शुं थई रह्युं छे ? त्यांनी सरकार पोतानो मत प्रगट करवा माटे पोतानीज प्रजानी कत्तल करी रही छे. हजारो स्त्रीओपर बळात्कार थई रह्यो छे. बंगला देशथी लाखो शरणार्थी भारत आवी रह्या छे, केटली

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्त्रीओनुं आपहरण कराय छे ! मानवनुं करुणक्रदन जाणे अनंत ब्रह्मांण्डोनुं भेदन करीनें भगवान् विष्णुना हृदय-कमलमां प्रविष्ट थई रह्युं छे.

आवा समयमां अमेरिका तथा चीन पाकीस्ताननी मददे शस्त्रास्त्र तथा सलाहकार मोकले छे. भारत चुपचाप जोई रह्युं छे, द्रौपदी वस्त्र-हरण वखते त्यांना बधा सभासदो जेम नपुंसक बनी गया हता तेम अत्यारे भारत नपुंसक बनी गयुं छे. भोगलिप्सा अनें सत्ताकांक्षाए भारतनें पुरो पाको नपुंसक बनावी दीधो छे. बंगला देशनें मान्यता देवा जेटली हिंमत पण भारत सरकारमां नथी. अमेरिका एक बाजु पाकीस्ताननें शस्त्रास्त्रनी भरपूर मदद करीने जाणे आपणा माथामां लात मारी रह्युं छे अनें बीजी बाजु आपणनें वधु निर्वीर्य बनाववानें अन्ननी सहायता मोकली रह्युं छे. एनी मदद लेवानो इन्कार करवानी तैयारी भारत सरकारमां नथी. माथा उपर लात मारीनें अमेरिका आपणा मोढामां रोटीनो टुकडो नांखी रह्युं छे. अनें आपणे खुशी थी कां रोतां रोतां ऐ टुकडो खाई रह्या छीए. आपणी भोगलिप्सा तथा सत्ता कांक्षानें कारणे आपणे आ प्रकारनी लातो खावी पडे छे.

शुं ? दुनियामां एवी कोई ताकात नथी जे आ अनंत ब्रह्माण्डोनें पण शरमींदा करवावाळी तथा ध्रुजावी देवावाळी निर्लज्ज हिंसानें रोकी शके ? शुं आ दरेक जीवित माणसो माटे तथा आखी दुनिया माटे लज्जानी वात नथी ?

चोथी शताब्दीनी वात छे. रोमन साम्राज्यमां दरेक उत्सव अनें आनंदना अवसरपर नरमेधनो रिवाज पडी गयो हतो. गुलाम अथवा केदीओने पांजरामां पुरवामां आवतां, तेना उपर सिंह जेवा हिंसक प्राणीओनें छोडवामां आवता हतां. ज्यारे ते जनावर पेला अभागी मानवनें फाडीफाडीने खातां त्यारे शहेरना लोको आनंद पामता हता. आ रिवाज राज्यना दरेक शहेरमां फेलाई गयो. अनें दिवसोदिवस वधवा लाग्यो. नीतिवान लोकोए तेनें रोकवानो प्रयत्न कर्यो. परन्तु तेनो प्रयत्न विफल थयो. त्यांनो बादशाह नीरो पण तेमां भाग लेतो हतो.

एक ईसाई साधुने ईश्वरीय प्रेरणा थई. एनुं नाम हतुं टेलीमेक्स. ते साधु आ क्रूर प्रथाने रोकवा नीकळी पड्यो.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

टेलीमेक्स ते समये त्यां पहोंची गयो, ज्यारे के त्यां एक पछी एक अभागी व्यक्तीनें पांजरामां धकेलता हता.

टेलीमेक्स एक उंची जग्यापर उभा थईनें लोकोनें उपदेश करवा लाग्या. एकक्षण लोको चुप रह्या. बीजी क्षणे पथरा मारवा लाग्या. परंतु साधु डर्या नहि. चारो तरफथी तेना उपर पत्थरोनी वर्षा थई. ते लोहीलोहाण थई गया. आंखो फूटी गई. आंखु मोढु फूटी गयुं, परंतु ते हाल्या नहि. अंतमां तेना प्राणपंखेरु उडी गयुं. परन्तु मारवावालाओए मारवुं चालु राख्यु. त्यांनी जमीन तेना लोहीथी भिंजाई गई.

बीजे दिवसे टेलीमेक्सना पवित्र बलिदाननी वात आखा राज्यमां फेलाई गई. आखुं वायुमंडळ पश्चात्तापथी व्याप्त थई गयुं. बादशाहे हुकम काढयो– आज थी मारा राज्यमां क्यांय पण आ प्रकारनो क्रूर तमासो न थाय. आपणो उत्सव निर्दोष मानवोना लोहीथी कलंकित न थाय.

रावण, दुर्योधन तथा यादवोनो वंश हिंसा अनें अन्यायनो सहारो लेवाथी नष्ट थयो. ते वखते एक एक वंश नष्ट थयो. आ वखते आखा मानववंशनो वारो छे. ईश्वरे हवे बतावी दीधुं छे के बधा एक बीजानी उन्नतीनो प्रयत्न करतां करतां सुखदुःखने सरखे भागे वहेंची आनंदथी जीवो, अन्यथा मानव वंशनी समाप्ति थई जशे.

ईश्वरे दुनियानें बचाववानी त्रीजी तक आपणनें आपी छे. टेलीमेक्सनी माफक आपणे मानवजातिनें गांडा तथा उन्मत्त हाथिओना पगतळे चगदाई जवाथी बचावी शकीए छीए. शुं आपणे आखी दुनियाना कल्याण माटे, मानववंशनें बचाववा माटे पोताना एशआरामनो भोग न आपी शकीए ?

कोरिया, जपान, विएटनाममां आवा क्रूर नर-संहार थया जे हवे पछीना हजारो वर्ष सुधी आपणा वंशजोनें लजावशे. हवे बंगला देशमां जे थई रह्युं छे ते मानव-जातीना इतिहासमां क्यारे पण नथी थयुं, हवे पछी क्यांक आवो मानव-संहार थाय तो ते सेंकडो गणुं भयानक हशे.

प्यारा भाईओ, जो आपणे चाहीए तो टेलीमेक्सनी माफक दुनियानें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बचाववानुं काम करी शकीए छीए. आ काम केवळ निष्क्रिय अहिंसाथी के न्यायनी भीख मांगवाथी नहि बने.

ईश्वर परम कृपाळु छे. ते फरी फरी मोको आपे छे. सहन करे छे. आपणुं आ संसारमां कईज नथी. आपणे जमीन, सत्ता तथा पैसापर अधिकार करी राख्यो छे. तथा करोडोने तेनाथी वंचित करी मूक्या छे. आपणे समाज-व्यवस्थामां, शासन-व्यवस्थामां आमूलाग्र परिवर्तन करीने हिंसाने रोकी शकीए छीए.

हवे एक बे व्यक्तिनो सत्याग्रह नहि चाले. आखो देश सत्याग्रह करे त्यारे ज ते सफळ थई शकशे.

मानव-जातिना आरंभ-काळथी पोतानाथी दुर्बळनुं शोषण करवुं, दबाववा, के सतावववानो जे रिवाज पडी गयो छे, तेनुं परिणाम आपणे आ सो बसो वर्षोमां खूब जोयुं. आजे आ रिवाजमां क्रान्ति करवी पडशे. दुर्बळोनी सेवा, अज्ञानियोनी मदद अने दुष्टताना उत्तरमां शिष्टतानो रिवाज शरु करीने आपणे एक नया युगना श्रीगणेश करी शकीए छीए. आज शुद्धतम सत्याग्रहनुं स्वरूप बनशे.

मानव-जातिना आरंभकाळथी जेटलां कुकृत्यो थयां छे तेना माटे आपणे घोर पश्चात्ताप करीए. तथा आपणीपासेनी **वधारेमां वधारे संपत्ति ग्राम-निर्माण कार्यमां खर्च करीए.** हजारो वर्षोथी आपणे जेने लुंटी रह्या छीए तेनी साथे संपूर्ण सर्वांगीण न्याय करीए, ईश्वरें जमीन बनावी छे ते खेडनारानी छे, तेना मालिक आपणे न बनीए. हजु पण जीवनना दरेक क्षेत्रमां मानवीय मूल्यो उपर अमल करीने आपणे बचीये अने दुनियाने बचावीए. आखुं राष्ट्र जो ए काम करे तो ते एक मोटो सत्याग्रह थशे अने आमांथी एक प्रचंड नैतिक शक्तिनो जन्म थशे अने एज दुनियाने बचावशे.

हे भारतना भणेला लोको ! हे शासकवर्गो ! हे पूंजीपती वर्गो ! ज्यां सुधी तमे लोको करोडो श्रमजीवियोने तेना मानवीय अधिकारोथी केवळ पशुबळ, चालाकी, नोट तथा कायदा द्वारा वंचित करता रहेशो त्यां सुधी याद राखो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के दुनियामां तमारी इज्जत नहि थाय. तमारे भिक्षापात्र लईनें फरवुं पडशे. तमारी आबरू रहेशे नहि, तमारे कीडामंकोडानी माफक जीववुं पडशे तथा कूतराने मोते मरवुं पडशे.

तमे तमारी नोट-बुकमां लखी राखो के ज्यां सुधी तमे राष्ट्रीय पैमानापर ग्रामीण लोकोपर करेला आर्थिक तथा बीजा अत्याचारोनें माटे प्रचंड पश्चात्तापनी साथे पुरेपुरूं प्रायश्चित्त नहि करो त्यां सुधी तमे मनुष्योनी माफक नहि जीवी शको. आ ईश्वरीय विधान छे जे महापुरुषोना मुखेथी निकळेलुं छे.

पाकिस्तान पोतानी प्रजा उपर प्रगट अत्याचार करी रह्युं छे. आपणे आपणा अन्नदाता अनें श्रमजीवी वर्ग उपर गुप्त अत्याचार करीए छीए. पाकीस्तान प्रगट हिंसा करे छे. आपणे एमनें भूख्या राखीने, क्षीण करीने मारी नाखवानी गुप्त हिंसा करीए छीए. बंगला देशनी प्रजा लडी रही छे. पण आ ग्रामीण प्रजा आपणाथी लडवानी वात पण विचारती नथी. सदीयोथी आपणा राक्षसी अत्याचार चुपचाप सही रही छे. ग्रामीण भाई बहेनो एटला अज्ञान अनें नादान छे के आपणा करेला जुल्मोनुं एनें भान पण नथी. आपणे एनो तिरस्कार करीए छीए. तुं तुं कहीनें बोलिए छीए. छतां तेओ आपणो आदर करे छे.

भारतना अशिक्षित डाकू पण जेनें त्यां एक वार अन्न खाई ले तेनें त्यां धाड पाडता नथीं. परंतु आपणे एवा डाकू छीए के जे लोको आपणा बंगला बांधी दे छे, आपणने अन्न-वस्त्र आपे छे तेओने सदीयोथी लूंटता आव्या छीये.

भारत दुनियाना प्रमत्त अनें गांडा हाथीयोनी शेतरंजनु रमकडुं बनें अनें आपणे जोई रहीये ? शुं हजार वर्षनी गुलामीथी आपणे दाखलो नहिं सीखीए ?

फकत मूठीभर लोकोना हाथमां सत्ता, पूंजी तथा जमीन होय ए शुं ईश्वरी विधानथी विरुद्ध नथी ? याह्याखांना हाथमां बधी सत्ता न होत सत्ता गामडे गामडे वहेंचायेली होत तो आवा अत्याचार थई शकत ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गांधीजी कहेता हता के अंग्रेजोए भारतनें निःशस्त्र करीनें एक महान अपराध कार्यो छे. परंतु भारतना उच्चवर्णीय लोकोए करोडो ग्रामिणोनें नोट तथा कानूनना बळपर जमीनथी तथा यंत्रशक्तिना बळपर स्वतंत्र ग्रामोद्योगथी वंचित करीनें जे अत्याचार कर्यो छे तेनी बराबरीनो बीजो अत्याचार मळवो मुश्केल छे. आजीविकानु कोईपण साधन एनां हाथमां नथी. फक्त बीजानी मजूरी करवी एज एक मात्र पेट भरवानु साधन रह्युं. अनंत काळ सुधी आ लोको आवी आर्थिक गुलामीमां केवी रीते रहेशे ?

आज गांधीजीनी कल्पनानें अनुसार आपणे देशमां कोई नैतिक शक्ति उभी करी होत तो शुं मजाल हती के पाकीस्तान बंगला देश उपर हुमलो करे ? अमेरिकानी पण शुं मजाल हती के पांच दस जहाज भरीनें शस्त्रास्त्र पाकीस्तान मोकले ?

जो आपणे जगतना कल्याणनी कामनाथी आपणी समाज तथा शासन व्यवस्थामां आमूलाग्र परिवर्तन करीनें, बधा शस्त्रास्त्र समुद्रमां फेंकी देत, सेना बरख्वास्त करत श्रमजीवी वर्गथी संपूर्ण न्याय करत अनें आखी दुनियानी सामे आ वातनुं एलान करत के बीजानी माफक आपणे पागल अनें मूर्ख बनवा चाहता नथी, उन्मत्त हाथियोना धाडामां भळवा मांगता नथी अनें एवुं एलान करत के दुनियानें मानवीय सद्गुणोनो नाश करावनारी, हेवान बनाववावाळी राजनीति तथा युद्धना कुचक्रथी मुक्तिनो रस्तो बताववा माटे आपणे आ पगलुं भर्युं छे तो एवो कयो देश होत जे आपणी सामे वक्र दृष्टिथी जोवानी हिंमत करत ?

हा आनेमाटे शैताननी शक्तिपर नहीं पण ईश्वरनी शक्ति पर अटल विश्वासनी जरुरत छे. पोताना महान् उद्देश्यनी शक्तिपर दृढ विश्वासनी आवश्यकता छे. अनें जरुरत छे प्रचंड आत्म-विश्वासनी.

शेताननी शक्तिपर विश्वास करतां करतां हजारो वर्ष विती गया. शेतानें दुनियानें जे रूप दीधुं छे ते आपणे जोई रह्या छीए. तो पण आपणनें शेतान पर विश्वास छे, ईश्वरपर नथी.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जो आपणे ईश्वरनी कल्याणकारी शक्ति उपर अटल विश्वास राखिने आ कदम उपाडीए तो दुनिया दंग थई जाय अने ते पण साचा मार्गपर चालवा लागे. तेना शस्त्रास्त्र अने हिंसा काम नहि आवे. विश्वामित्रनी माफक तेने पण कहेवुं पडशे :—

धिगिदम् क्षत्रियबलम् ब्रह्मतेजो बलम् बलम् ।

उपसंहार

भारतना शिक्षित भाईओ अने बहेनो ! कोई एकांत स्थानमां कोई महा-पुरुषना चित्रनी सामे बेसीने सर्वान्तर्यामी परमात्मा सामे उभा छे एम समजीने आ वात उपर विचार करो के आज सुधी सत्ताकांक्षा अने राज सत्ताए क्यां क्यां दुष्कर्म नथी कर्यां ? मातापितानी हत्या, हजारों निरपराध स्त्रीओने विधवा बनाववा तथा हजारो बाळकोने अनाथ बनाववानुं पापकर्म राजसत्ताए नथी कर्युं ? तमारा मनश्चक्षुओनी सामे युद्धना मेदाननुं चित्र खेंचीने जुओ के केटलुं लोही वही रह्युं छे ? रातने समये अर्धमर्या सैनिकोने जंगली जानवर कई रीते तोडीतेडीने खाई रह्या छे ? तेनो चित्कार शुं तमने संभळाय छे ? शुं ते तमाराथी थता शोषण अने तमारी भोगलिप्सानुं फळ नथी ? अनादि काळथी राक्षसी सत्तानां दुष्कर्मोनां कारणे मानवताने जे असह्य यातनाओ सहेवी पडी अने मानवतानुं जे पतन थयुं छे तेनी कल्पना करो ! जे लाखो स्त्री–पुरुष तथा बालक बालिकाओने पोतानुं सर्वस्व गुमावी रस्ताना भिखारी बनवुं पडयुं अने ठंडी गर्मीमां अने वर्षाऋतुमां आकाशनी नीचे रहेवानुं सौभाग्य प्राप्त थयुं तेना दुःखोनी कल्पना करो ! तमने ए नथी सजमातु के ए बधानुं कारण आपणी भोगलिप्सा अने अर्थ-तृष्णाज छे ?

आ युद्धोने कारणे स्त्रीओने आज सुधी जे मरणांतिक शारिरीक तथा मानसिक क्लेश थया छे तेनां मूळमां शुं आपणी समाज-रचना, शोषण-खोरी अने भोगलिप्साज नथी ? जे हजारो स्त्रिओपर बळात्कार थयो छे, जेमना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अपहरण थयां छे, जे वेचाई गई छे तेनी मानसिक यातनाओनी शुं आपणे कल्पना करी शकीए छीए ? आपणी माता, आपणी बहेन के पत्नीपर आवुं भयंकर संकट आवे तो आपणे पसंद करीशुं खरा ?

तो पछी पेला करोडोनी तरफ दृष्टी फेरवीए ! साफ शब्दोमां कहेवुं पडशे के आपणे एमने आपणी स्वर्थ-प्रेरणाथी गुण्डागीरीना बळपर गुलाम बनावी राख्या छे जेथी आपणनें शारीरिक श्रम कर्या वगर बधा सुखोपभोगना साधन मळी जाय। जो ते करोडो लोको आज पैसा अनें नोटोना बदलामां श्रम करवानुं अनें कोई पण चीज आपवानुं बंध करी दे तो तमारी नोट, वक्तृत्वशक्ति, कायदाना पुस्तको के बंदुक शुं करी शकशे ? ते करोडों लोकोमां कोई संगठन-शक्ति नथी, आपणे तेमनी कमर तोडी नांखी छे जेथी ते कदी उभा थईज न शके, परंतु याद राखजो के कोई पण अत्याचार अनंत काळसुधी नथी चाली शकतो. मानवीय सद्गुणोंना ह्रास अनें विनाश एज तमारा क्षुद्र सुखचैननी कींमत थशे.

आजे जानवर तथा पिशाच पण आपणी शोषणखोर समाज-रचना जोईनें रोतां हशे. आजे क्यांय मनुष्यताना दर्शन थाय छे के ? जो थता हशे तो ते आवी व्यवस्था विरुद्ध घोर विद्रोह कर्या वगर रहेशे नहि. जे समाज-व्यवस्थाना फलस्वरूप लाखो लोको शेतान बनें छे तथा करोडोंने बेहाल थवुं पडे छे ते समाजव्यवस्था शुं मनुष्योनें रहेवा लायक छे ? अने आ बधानी जवाबदारी आपणा बधापर अनें दरेक पर नथी ?

शुं ईश्वर छे ? शुं तमारो विश्वास छे के ईश्वर छे ? अगर तमारो साचो विश्वास छे के खरेखर ईश्वर छे अने ते बधाना हृदयमां छे अनें तेणेज आबधुं बनाव्युं छे, आपणुं आ संसारमां कंईज नथी तो तमे एक क्षणनें माटे पण आजनी समाज-रचनानें बरदास्त नहि करी शको. खाडामां जाय आपणां भोग-साधन, नोटोना बंडल, कायदानी पोथिओ, अदालतो, चुंटणीना नाटक, स्थापित स्वार्थोनुं रक्षण करवावाळी पोलीस, जेल, तथा सेना, प्रजानी आंखमां धूळ नाखनार राजनीतिज्ञोना भाषण, खोटी खर्चाळ फेशन सिखवनारी आपणी ध्येयशून्य अनें पुरुषार्थहीन शिक्षण-व्यवस्था !!

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जो आपणुं हृदय जरा पण संवेदनशील होय अनें जो आपणे आ संबंधी कल्पना करी आवुं चित्र नजर सामे लावीए तो एमां जरा पण संदेह नथी के आपणुं प्रत्येक रुंवाडुं, लोहीनुं दरेक टीपुं रोई उठशे. आपणी आंखोथी अश्रुधारा वहेशे. आपणनें आपणी तुच्छ भोगलिप्सा पर ग्लानि थशे.

आपणी पासे जे नैतिक अनें आध्यात्मिक संपत्ति छे तेनो जो आपणे पूरेपूरो उपयोग करीए तो आपणनें दुनियाना अन्य देशोपासेथी अन्न, यंत्र अथवा अन्य कोई पण वस्तुओ मांगवानी जरुरत नही रहे.

आपणे ग्रामीण जनता साथे प्रेमपूर्ण व्यवहार करीए अनें अपनावीए, ऐनु गुमायेलु स्वाभिमान फरीथी जागृत करीए, एनी साथे संपूर्ण न्याय करी प्रेम, सहानुभूति तथा सौजन्य द्वारा एमनो विश्वास मेळवीए. श्रमजीवी अनें बुद्धिजीवी वर्ग वच्चे जे दिवाल आपणे उभी करी छे तेनें तोडी साची भाई-बंधी करीए, स्त्री–जातिपर थता बेशरम अत्याचारोनें रोकी ऐनें उन्नतिना मार्गपर लई जईए, राष्ट्रना कार्योमां ऐनें संपूर्ण सहभागी बनावीए अनें सहु मळीने तन, मन धनथी दुर्बळ वर्गनी सेवामां लागी जईए. आवु करवाथी दुनिया समक्ष आपणे उन्मस्तक उभा रही शकीशुं.

आपणे केन्द्रीय अनें प्रान्तीय सत्ताओनें नेस्तनाबूद करीनें गामो अने शहरोनें पोताना मामलामां स्वतंत्र करीए, पोलीस, जेल अनें सेना विभागनें बरखास्त करीए, एकेएक नोटनें आगनें हवाले करी दईए, पाणी तथा हवानें दूषित करनारा तथा बेकारी वधारनारा बधां कारखाना बंध करीए तो सर्वत्र मनुष्यतानुं दर्शन थशे; त्यारे आपणी पर हुमलो करवानो कोई विचार नही करे.

हजी पण ईश्वरनो अनें काळ-पुरुषनो संकेत न समजतां भारतना शिक्षित–वर्ग दुर्योधन अनें रावणनो रस्तो अपनावशे तो ते पण रोमनी माफक पृथ्वीतल-परथी समाप्त थई जशे.

एमाटे भारतना शिक्षितवर्गो ! हजु पण जागो, कुतरानी माफक जीववा करतां, आपणा कोटि कोटि श्रम-जीवी भाई-बहेनोनी साथे संपूर्ण न्याय करीनें, भोगलिप्सा, अर्थ-तृष्णा तथा सत्ताकांक्षानें लात मारी मनुष्यनी माफक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जीववामांज तमारुं कल्याण छे. लखी लो के आखी दुनिया चाहे ते करे तो पण आजनी पापमय विश्वव्यवस्था कोई पण हालतमां टकवानी नथी. ए पडुं पडुं थई रही छे. आनी नीचे दबाईने चूरे चूरा थवाने बदले एज सारुं हशे के आपणे प्रकृतिना नियमोनुं उल्लंघन न करतां जीवमात्रनी एकताना आधारपर एक नवी अनें अहिंसक समाज-रचनाना काममां लागी जईए.

जे देशमां अनेक महान् स्त्री-पुरुषो तथा संतो थया जे देशमां आध्यात्मिक मूडीनी मोटी थापण छे, जे देशमां विचार अनें साहित्यनो अजोड भंडार छे ते देशनी आजनी स्थिति जोईने भारत मातानी आंखमांथी आंसु वहेतां हशे.

काल करे सो आज कर आज करे सो अब
पलमें परलय होयगी बहुरि करोगे कब ?

कबीर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ब्रह्मचर्यनी दृष्टि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लेखकनुं निवेदन

मारो जन्मज एक अत्याचार-पीडित मानी कूखे थयो हतो, अत्याचार करनार तेना पतिज हता. मार तथा कठोर वर्तन सहन करतां करतां ते शांत स्वभाव-वाळी स्त्री मांदी रहेवा लागी. तेनुं आखरी जीवन शरीरनी दृष्टीए दुःखी हतुं.

ते एम कहेती हती के जो मने बीजो जन्म मळवानो होय तो पुरुषनो मळजो, स्त्रीनो नहीं.

नारीजातिं ऊपर थनारा अत्याचारो प्रत्ये बळवानी भावना कदाच मारा हृदयमां ते वखते जन्मी हशे ज्यारे हुं मांना पेटमां हतो.

जन्म्या पछी पण मने वेदज्ञब्राह्मणोंने घेर स्त्रियो पर थता अनेक अत्याचारो जोवा मळ्या.

एके कुवामां पडीनें जीव दीधो, एके अग्निस्नान करीने जीव दीधो. एक झुरीझुरीनें मरी. गामडामां पहोंच्या पछी तो तेवी सेंकडो जोई.

लग्न कर्यावगर सेवाव्रत लीधुं तेना कारणे विषयवासना जीतवानां प्रयत्नो करवामां मने जे अनुभव थयो ते आ पुस्तक मां प्रगट कर्यो छे.

हुं मारा पडछायाथी लडतो रह्यो. लडतां लडतां परसेवे रेबझेब थयी गयो. छेल्ले समजायुं के आतो मारो ज पडछायो छे. लडवुं बंध थयुं, मोढुं फेरवीने जोतांज पडछायो अदृश्य थयी गयो.

आनो अर्थ ए थयो के विषय-वासना मारीज छाया हती, मारीज बनावेली हती, वर्षोसुधी नाहक लडयों, तेनुं स्वरूप ओळखतांज ते अदृश्य थयी गई.

पूर्वग्रह तथा संस्कार मजबूत बन्या होय तो तेमने नष्ट करवामां समय लागे छे, मारो तो निःसंदिग्ध अनुभव एवो छे के विषय-वासना नामनी कोई स्वतंत्र वस्तु छेज नहिं. ते आपणी मूर्खता तथा अज्ञाननी उत्पत्ति छे. आ अज्ञान अने मूर्खताने ओळखतांज ते अदृश्य थयी जाय छे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपणी मूळभूत भूख

आ विशाळ सृष्टिनो रचणार कोई हशे, अहिं व्यवस्था छे, आनंद छे, प्रेम छे, सौंदर्य तथा सादाई छे, सूर्य, चंद्र, पहाड, नदिओ, वनस्पति, समुद्र, आकाश अने विविध गुण अने शक्तिवाळा प्राणिओ छे. आ बधामां माणस श्रेष्ठ गणाय छे.

बीजा जनावरोमां न मळनारी त्रण विशेषताओ मानव-प्राणीमां होय छे. हाथ, वाणी, अने बुद्धि.

आ आश्चर्य–चकित करणारी सृष्टिने जोईने मानवी तेना रचनारानी शोधमां लागी जाय छे.

टुंक समयमांज आ वातनी एने जाण थाय छे के नश्वर सृष्टिथी जूदूं नामरूप अने देश-काळथी भिन्न एक अविनाशी तत्त्व मोजूद छे, ते सत् पण छे, चित् एटले चैतन्यस्वरूप छे, अने आनंदस्वरूप पण छे. आ सचराचर विश्ववडे एज एक चैतन्य प्रकट थयुं छे.

निसर्गमां प्रकृतिमां सर्वत्र सौंदर्य छे, चेतन जीवो मां प्रेम छे. सौंदर्य जोईने प्रेम उत्पन्न थाय छे. अने आनंद पण थाय छे.

आनंद समुद्रनी जेम स्थिर छे. प्रेम नदीओनी माफक सेवा करवा माटे अने दुःख दूर करावा माटे दोडे छे. नदीओनुं मूळ अंततः समुद्रज छे. एज प्रमाणे प्रेमनुं मूळ आनंदस्वरूप परमात्माज छे, आनंद, प्रेम अने सौंदर्य एकज परमात्माना भिन्न भिन्न गुण छे.

प्रेम प्रकट करवा माटे द्वैतनी आवश्यकता छे. आ माटे ईश्वरे आ अनंत रूप धारण कर्यां छे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आकाशमां सर्वत्र अवाज छे. परंतु कानोने ते संभळातो नथी, ते अवाजने आकर्षित करीने फरी तेने प्रगट करवानुं कोई साधन होय तो ते अवाज संभळाय छे, आकाशवाणी वडे आपणे ते अवाज सांभळीए छीअे.

जीवमात्रनां शरीर ईश्वरत्त्वने अने तेना अनंत गुणों ने प्रकाशित करनारा यन्त्र छे, तेमां पण मानव-शरीर एक एवुं सर्वोत्तम यन्त्र छे के जेमां ईश्वरना सच्चिदानंद स्वरूपनी अनुभूति थाय छे. ज्यारे मनुष्यनो अहं-भाव आ सच्चिदानंद स्वरूपमां लीन थाय छे त्यारे तेने आ वातनो दिव्य अनुभव थाय छे के आ जे सच्चिदानंद स्वरूप छे तेज मारुं साचुं स्वरूप छे, आ शरीर नहि.

जेम के जमीनमां केरी वावीए तो ते जमीन ने फोडीने विशाळकाय वृक्ष तथा फळफूलना रूपमां प्रगट थाय छे, एजप्रमाणे ईश्वर अनंत रूपोंमां प्रगट थईने पोताना अनंत गुणोंने प्रकाशित करे छे.

"हुं छुं" एवुं भान एज शरीर स्थित ब्रह्मनुं व्यक्त तथा सूक्ष्म रूप छे. ज्यारे ए भान पोताना मूळस्वरूप ब्रह्मनी साथे एकतानो अनुभव करवाने बदले शरीरनी साथे एकरूप थयी जाय छे त्यारे अज्ञान अने दुःखनी उत्पत्ति थाय छे.

परमात्माये पोताना निर्गुण निराकार सच्चिदानंद स्वरूपने प्रकाशित करवा माटे सगुण साकारनो आश्रय लीधो. परंतु परिणाम ऊंधु थयुं. अहं-भावयुक्त मानव सगुण साकारमां लिप्त थई गयो.

बाळक हमेशा पोतानी माने मळवा उत्सुक रहे छे. एजप्रमाणे जीवात्मा पण पोताना मूळस्वरूप परमात्माने मळवा माटे सदाय उत्सुक रहे छे. एज एनी प्रकृत भूख छे. ते पोताना देश-काळातीत, नामरूपातीत सच्चिदानंद स्वरूपथी च्युत् थईने देशकाळ अने नामरूपथी घेराएला संसारमां तथा मानव-शरीररूपी बंदीगृहमां प्रविष्ट थयो छे. ए माटे माथी विखुटा पडेला बाळकनी माफक पोताना मूळस्वरूप परमात्माथी मळीने ते निरतिशय आनंदनो अनुभव करवा माटे हंमेशा तडफडतो होय छे. परन्तु ते ज्ञान-पूर्वक नथी थतुं. बाळकने भूख लागे छे. त्यारे ते रडे छे पण तेने ए वातनुं ज्ञान नथी होतुं के मने भूख लागी छे. दुध पीवुं जोइये. एज स्थिति जीवात्मानी थाय छे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आ प्रकृत भूखने जाणीने ब्रह्मात्मैक्यनी अनुभूतीनी प्राप्तिने माटे प्रयत्न करवाने बदले ते स्थूल जड सृष्टिमां पोताना मूळस्परूप आनंदने गोतवा लागे छे. त्यांथीज तेना दुःखद इतिहासनो आरंभ थाय छे.

बाळक जे प्रमाणे कोई पण चीज मोढामां नाखे छे तेजप्रमाणे माणस दरेक वस्तुमा सुख गोते छे. अंधारी राते जंगलमां भटकनारा माणसने ज्यां सुधी पोतानु घर नथी जडतुं त्यां सुधी तेने कांटाकांकरा झाडझांखरामा धक्का खाईने के जंगली जनावरोनु भक्ष्य बनीने अनेक दुःख अने यातनाओ सहेवी पडे छे. एजप्रमाणे मानव-समाज ज्यां सुधी ज्ञानपूर्वक परमात्मानी प्राप्तिनी दिशामां आगळ नहि वधे त्यां सुधी तेने अनंत यातनाओ सहेवी पडशे.

ब्रह्म-प्राप्तिनो प्रयत्न करवाने बदले सत्ताकांक्षा तथा अर्थतृष्णानी पाछळ पडवाथी दुनियामां जे अनर्थो अने दुर्गुणोनी सृष्टि थयी छे तेने आपणे रोज जोइये सांभळीये अने वांचीये छीए. एनुं वर्णन छोडीने हुं अहीं काम-वासनानो विषय लऊं छुं.

काम-वासना प्रकृति-दत्त नथी.

समाजमां आ धारणा अत्यंत दृढ बनेली देखाय छे के विषयवासना प्रकृति-दत्त छे, अजेय छे, अदम्य छे. प्रकृतिए जीवसृष्टिनी परम्पराने चालू राखवा माटे जीव-मात्रमां काम-वासनानु बीज राखी मूक्यूं छे. अने तेने अजेय अने अदम्य पण बनाव्युं छे. मोटा मोटा योगी ऋषि महर्षि पण आनी सामे नमी गया छे. शिवजी तथा इन्द्र जेवा देव, विश्वामित्र जेवा तपस्वी पण आने वश थयी गया छे. एवी परिस्थितिमां साधारण माणसनी तो वातज शुं?

विषय-भोगने शास्त्रीय रूप आपीने तेने श्रृंगार-रस नाम आपी दीधुं छे. एना ऊपर पुस्तको लखायां छे. विषय-वासनाने सुंदर रूप आपीने सभ्य वेश पहेरावनानो घणो प्रयत्न थयो छे.

परन्तु विचारवानी वात ए छे के शुं विषय-वासना प्रकृति-दत्त छे?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रजोत्पत्ति माटे ईश्वरे व्यवस्था जरूर करी राखी छे, परंतु संतानोत्पत्तिनें माटे जो क्रिया करवी पडे छे तेनी कोई वासना बनावी नथी. अन्नवगर आपण जीवी शकीए नहि. ते माटे अन्नोत्पादननी व्यवस्था ईश्वरे करी राखी छे. घउं अगर चोखा वाववानी जरुरीयात होय तो खेडूत योग्य जमीन जोईनें जरुरी व्यवस्था करीनें यथा समयपर बी वावे छे. परंतु घऊं के चोखा वाववानी कोई वासना तेना माथे सवार थती नथी. घऊंनी जरुरीयात नहि होय तो ते घऊ नहि वावे, तेने तेनी याद पण नहि आवे, वासना तो दूर राही.

संताननी आवश्यकता होय तो कोई गृहस्थ संतानोत्पत्तिना नियमोनुं ज्ञान योग्य रीते प्राप्त करीनें योग्य समये दृढ-शरीरवाळुं चारित्र्यसंपन्न संतान उत्पन्न करवा माटे गर्भाधाननी क्रिया करशे, संताननी जरुरीयात न होय तो ते स्त्री-सहवास नहि करे; स्त्री-सहवास करवानी कोई वासना तेनें पजवशे नहि.

कोई खेडूत फावे त्यां, फावे त्यारे, फावे तेवुं बी वावशे नहि, कदाच कोई खेडूत तेवुं करे तो ते गांडो अगर मूर्ख कहेवाशे, एजप्रमाणे संताननी जरुरत न होय त्यारे कोई गृहस्थ व्यर्थ वारंवार स्त्री-संग करीनें पोतानुं अमूल्य वीर्य खोशे नहि. जो ते तेम करे तो तेनी गणतरी मूर्ख के गांडामां थवी जोईये.

प्रकृति कोई भूल नथी करती. जो प्रकृतिए मनोरंजन माटे के आनंद प्राप्ति माटे स्त्री-पुरुष सहवासनी व्यवस्था करी राखी होत तो केवल आनंद-प्राप्ति माटे स्त्री-सहवास करवाथी वीर्य-स्खलन थवुं जोईतुं न होतुं. परंतु स्त्री-संग करवाथी दर वखते वीर्य अनें रजनुं स्खलन थाय छे, आथी आ वात सिद्ध थाय छे के ईश्वरे केवल गर्भ-धारणामाटेज स्त्रीना शरीरनी रचना करी छे.

जो आपणे कहीये के ईश्वरेज विषय-वासना नें अजेय अनें अदम्य बनाव्या छे तो आज-सुधी स्त्रीओ ऊपर बळात्कार इत्यादि जे अनेक अत्याचारो थया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

छे तेनी जबाबदारी ईश्वर ऊपर आवे छे. माणस ऊपर नहि, त्यारे तो एम कहेवुं पडशे के ईश्वरे स्त्रीओनें अत्याचार सहेवा तथा पुरुषोने अत्याचार करवा माटे सर्ज्यां छे. एम कहेवुं ते विवेक-सम्मत नथी.

कोई कहे के ईश्वरे विषय-वासनानें ए माटे अजेय बनावी छे के जेथी आपणनें मननें जीतवानो पुरुषार्थ करवो पडे, मनोजयनुं शिक्षण मळे तथा परमात्मानी प्राप्तिरूप अलभ्य लाभ मेळवतां पहेलां आपणे सांसारिक सुखोनें तिलांजलि आपवानुं धैर्य बताविए अनें त्यारेज सहेलाईथी नहि अनेक कठिणाईयो सहन कर्या बाद ईश्वरनी परीक्षामां उत्तीर्ण थया पछी ईश्वरनी प्राप्ति थाय.

कोई मा पोतानी तरफ दोडी आवता बाळकना मार्गमां मोटा मोटा पथरा के कांटा कांकरा वेरती नथी के जेथी बाळक सहेलाइथी तेनी पासे न आवी शके. परन्तु रस्तामां कांटा कांकरा के पथरा होय तो तेने खसेडीनें रस्तो चोख्खो पण करी दे छे. जेथी बाळक पडी न जाय. ईश्वरे परमात्मानी प्राप्ति माटे मानव शरीररूपी सुंदर अनें सर्वांगपरिपूर्ण यन्त्र बनाव्युं छे जेमां आत्मानुभव प्राप्तिना बधा साधनो व्यवस्थित रीते गोठव्या छे, एनी प्राप्ति माटेना रस्ता ऊपर अडचणो मूकी नथी.

कोई पूछे के पुराणोमां अनेक वार्ताओ आवे छे जे विषय-वासनाना अस्तित्व अनें अजेयता सिद्ध करे छे, शुं ते बधी खोटी छे? अनेक संत सत्पुरुषोए पण विषय-वासनानी प्रचंड शक्तिने मान्य करी छे, कहेवाय छे के परमात्मानी असीम कृपा वगर माणस आ मायाजाळमांथी पार थयी शकतो नथी. शुं आ बधुं खोटुं छे?

भारतमां घणी स्त्रीओ बाळकोनां मनमां भूत इत्यादिनी बीक बेसाडी दे छे. मोटा थया पछी घणा ते बीक थी मुक्त थाय छे. अनें कोई बीकना संस्कारोथी छुटी शकता नथी. आवा माणसोनें लाचारीथी अंधारामां जवुं पडे तो एनी छाती धडके छे, थोडा लोको बहु भयथी मरी पण जाय छे, परन्तु जे माणसो भूतनें खोटुं समजे छे अने तेना अस्तित्वनो अस्वीकार करे छे तेनी न तो छातीं धडके छे के न तो मरी जाय छे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

खरूं जोतां आपणा मनमां विषय-वासना विषे संस्कारो, विचारो अने खोटी धारणाओ मजबूत रीते घर करी गई छे अने अपणे तेने मानीए छीए. साचु तो ए छे के आपणने विषयवासना नहि पण तेनी बीक पजवे छे. अपणे भूतना अस्तित्वने मानीये अने भूतथी बचवा इच्छीये तो ते केम बनी शके ? थोडी घणी बीक तो मनमां रहेशेज. आपणे भूतने मानवा चोख्खी ना कही दईये, अपणा मनमां ते बाबत जरा पण शंका न रहे, भूत छे ज नहि तेवो आपणो पाको मत होय तो अंधारी राते जंगलमां जइए तोपण अपणने भूत देखाशे नहि. अने तेनी बीक लागशे नहि.

समाजमां अनादि काळथी अनेक खोटी मान्यताओ चाली आवे छे, पृथ्वीने सहस्र फेणवाळा शेषनागे ऊंचकी राखेल छे, ज्यारे ते थाकी जाय छे त्यारे एक फेण उपरथी बीजी फेण ऊपर पृथ्वीने राखतां धरतीकंप थाय छे. आवी वातो आपणामांय घणाये सांभळी हशे. पुराणोमां आवी वातो लखेली होवा छतां आपणे तेने खोटी मानीये छीऐ. पृथ्वी वगेरे अनेक ग्रहो उपग्रहो परस्पराकर्षण शक्तिथी पोतपोताना स्थानपर टक्या छे.

संत, ऋषि, महर्षि पण माताना उदरमांथी जन्मे छे. समाजमां ते ते समयनी प्रचलित धारणाओनी तेमना उपर पण असर थाय छे. ते कांई सर्वज्ञ नथी होता, ते माटे तेओनी दरेक वातने साची मानवानी कोई आवश्यकता नथी.

थोडा घणा सत्पुरुषोए जातपातने तथा स्त्रीओनी आध्यात्मिक अयोग्यताने एकहद सुधी मानी छे. परन्तु त्यार पछीना महापुरुषोए आ बंने धारणाओने मानवानी चोख्खी ना पाडी छे अने आ खोटी मान्यताओने समाजमांथी दूर करवानो पण प्रयत्न कर्यो छे.

एजप्रमाणे पहेलांना सतपुरुषोए विषय-वासनानी अजेयतानो स्वीकार करवा छतां आपणे ए भ्रमने मानवानो इन्कार करी शकीये.

ज्यारे पण कोई रीतिरिवाज के विचारना घणा दुष्परिणामो निकळे छे अने समाजने तेनुं फळ भोगववुं पडे छे ते कारणे समाज अधोगति तरफ जवा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मांडे छे त्यारे ते विचारो अने रीतिरिवाजोंनुं संशोधन करवुं पडे छे. सत्यने शोधवुं पडे छे.

जुना जमानामां राजा ईश्वरनो अंश मनातो. परन्तु पाछळथी ज्यारे राजाओ अत्याचारी थवा लाग्या अने प्रजा तेमना अत्याचारोथी त्रासी उठी ते वखते विवेकशाळी पुरुषोए प्रजाद्वारा विद्रोह कराव्यो अने एवा राजाओने दुर कर्या पछी लोकोनी आ विषेनी मान्यता पण दूर थई गई.

विषय-वासनाने प्रकृति-दत्त तथा अजेय मानवाथी तेना अनेक दुष्परिणामो आजे समाजने भोगववां पडे छे. आ दुष्परिणामो नाना नाना छोकरा छोकरीओने कोरीकोरीने खाय छे. मानवजातिने धीमे धीमे परन्तु निश्चित रूपथी अधोगति तरफ लई जाय छे. आपणे आ दुष्परिणामोथी बचवुं होय तो आ खोटी मान्यताओने दूर करवी पडशे.

कोई पण साची धारणाना अनेक-विध दुष्परिणामो कदी पण न होई शके. आ भूलभरेला भ्रमने लीधे असंख्य लोकोनुं पतन थयुं छे, दुनियामां दुःख तथा दुर्गुणोंनी सृष्टि थयी छे. ए माटे बधी ताकात लगाडीने समाजनी आ धारणाओने दूर करवी पडशे.

जे पुरुष अगर स्त्रीनी एवी दृढ मान्यता होय के विषय–वासना प्रकृतिदत्त नथी, एनुं कोई स्वतंत्र अस्तित्व नथी तेमने विषयवासनानो स्पर्श क्यारेय थई शकतो नथी. तेमने विषय-वासना क्यारेय पण पजवी शकती नथी.

सम्मोहन करवावाळा लोको कोईने खूब तडकामां उभा राखीने तेनी एवी धारणा बनावी दे छे के ते कडकडती टाढमां उभो छे. तरतज ते टाढथी थथरवा मांडशे, पछी तेने कडकडती टाढमां उभो राखीने एनो एवो विश्वास करी नाखे छे के ते सख्त तडकामां उभो छे. तरतज ते परसेवाथी रेबझेब थयी जाय छे. आवा प्रयोगो लोकोये जोया छे. दृढ धारणामां प्रचंड ताकात होय छे.

ज्ञानी पुरुषो कहे छे के आपणने "आ शरीर हुं छुं" एम लागे छे. खरी रीते आपणे शरीर नथी, हुं ब्रह्मरूप छुं, शरीर आपणुं रहेवानुं घर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

छे. इन्द्रियो मारे नोकरो छे. आ इद्रियोना जुदा जुदा काम वहेंचाया छे. पेशाब करवानी कोई वासना नथी होती. ते एक आवश्यक क्रिया छे. संतानोत्पत्तिनी क्रिया पण एक जरूरी काम छे. तेनी कोई वासना केम होई शके ?

जीवनना दरेक क्षेत्रमां आपणे निसर्गथी दुर जई रह्या छीए अने फरी सुख-शांतिपूर्ण जीवन पण जीववा इच्छीये छीए, ते केम बनी शके ?

संतुलन शास्त्रना ज्ञाताओ कहे छे के कृत्रिम खातर जमीनमां नांखवाथीं कृत्रिम अन्न उत्पन्न थशे. कृत्रिम अन्न खावाथी कृत्रिम माणस उत्पन्न थशे. कृत्रिम माणस कृत्रिम रीतेज विचारशे जमीन, वनस्पति अने मनुष्य अथवा प्राणियोंमां एक प्रकारनुं संतुलन छे. एने बगाडवुं न जोईये.

आनो एक दाखलो आपुं छु. एक प्राचार्य सिगारेट पिता हता. में तेमने सिगरेटना दोष बताव्या. एमने सिगरेट छोडी देवा कह्युं. ते बोल्या "जो हुं सिगरेट छोडी दउं तो सिगरेटनो धंधो करनारा लोकोने भुखे मरवुं पडे. हवे विचारवानी वात तो ए छे के सिगरेट बनावनारा लोको सिगरेट खाईने जीवता नथी. तेओ तो अन्न खाय छे हजारो एकर उपजाऊ जमीनमां तमाकू वाववाथी देशमां अन्ननी पेदाश ओछीज थशे. अन्न ओछुं थवाथी लोकोने भुखे मरवुं पडशे. विश्व-विद्यालयना एक प्राचार्य आ प्रमाणेनो जवाब आपे छे ते एक आश्चर्यनी वात छे. आ विचारवानी खोटी पद्धति छे.

कोई लोको कहे छे के स्त्री-पुरुष सहवासमां आनंद छे. तेथी एनुं आकर्षण होय छे. आजनो माणस पोताने बुद्धिमान अने वैज्ञानिक माने छे. परन्तु ते कार्य-कारणनो विचारज करतो नथी. आ पण एक अंध-श्रद्धाज छे. आनंद ते क्रियाने लीधे नथी थतो. प्रेमोत्कर्षथी ज्यारे माणस- शरीरने भूली जाय छे त्यारे तेने आनंद थाय छे.

एकादो भक्त परमेश्वरनी सुंदर मूर्तिने जोईने प्रेम-विभोर थयी जाय छे. तेनी आंखोंथी अश्रुधारा वहेवा लागे छे. तेनु हैयुं भराई जाय छे. गळुं रुंधाई जाय छे. ते वखते तेनु चित्त तथा अहंकार आत्मामां लीन थई जाय छे. तेथी तेने आनंद थाय छे. आपणे प्रेम तथा भक्तिनो उत्कर्ष करी लईये

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तो गमे त्यारे इन्द्रियो अने शरीरनी सहायता वगर अनिर्वचनीय आनंदनो अनुभव करी शकीये.

स्त्रीसहवासथी शक्तिनो क्षय थाय छे. अनुभवी लोको कहे छे के तेमां थाक लागे छे. पाछळथी आत्म-ग्लानि तथा पश्चात्ताप पण थाय छे. घणा लोको माटे तो ते एक दुर्व्यसन बनी जाय छे. वारंवार स्त्रीसंग कर्याविगर चेन नथी पडतुं एवानी स्थिति दारूडिया जेम दयाजनक बनी जाय छे. स्त्री शरीररूपी घरनी प्रेशाब वहेवानी ए नीकमा आनंद केम होई शके ?

कहेवाय छे के स्त्री-पुरुषोमां एक प्रकारनुं आकर्षण होय छे. आकर्षण तो सर्वत्र छे. सुंदर प्राकृतिक दृश्य जोईने आपणे मुग्ध थयी जईअे-छीए. कीडीओना करडवाथी तरफडती ईयळने जोईने आपणने दया आवे छे. नाना बाळकोने जोईने आपणे तेने उंचकी लईये छीए. एमनी साथे रमीये छीए. आ पवित्र आकर्षण छे. आपणा बधामां एकज आत्मतत्त्व छे, अने ते प्रेमस्वरूप छे अने तेथी आपणामां परस्पर आकर्षण छे.

यौवनमां शरीर पूर्णताये पहोंचे छे. तेथी आकर्षण पण पूर्णताये पहोंचे छे. ते आकर्षणने भोगेच्छाथी शुं संबंध होई शके ?

क्यांक एकादुं सुंदर चित्र आपणे जोईये तो तेने खावानी इच्छा नथी थती. आपणे तेने जोतां धराशुं नहि. कारण सौंदर्य आंखोनो विषय छे. एजप्रमाणे कोई सुंदर स्त्री अगर पुरुषने जोईने भोगेच्छा पेदा थवी अस्वा-भाविक छे. आपणे आपणा मगजमां खोटा संबंधो जोडी दीधा छे. तेनुं आ परिणाम छे.

ते एक आध्यात्मिक आकर्षण छे. आपणने मडदुं आकर्षित करतुं नथी. आत्मा शरीरवडे आकर्षे छे. खरी रीते ते एकबीजाने महान रूपमां जोवानी आकांक्षा छे. तेने आपणे खोटी दिशामां न वाळीये. बाळकने मा प्रेमभरी दृष्टीथी जुवे छे. बाळक मोटुं थईने शरीरथी नीरोगी अने बळवान् सच्चरित्र महान तथा परोपकारी थाय तेवी मानी आकांक्षा छे. मा तेने एवा रूपमां जोवा इच्छे छे. स्त्री-मात्रने पुरुष अने पुरुषमात्रने स्त्रियो आ दृष्टीथी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जोई शके छे. एज परस्पराकर्षणनुं साचुं रूप छे. आचुं दृष्टीनुं बी आपणे आपणी अंदर वावीये तो आना मधुर फळ निकळशे. पति-पत्नी आ प्रेमोत्कर्षराद्वा एकबीजानी आध्यात्मिक उन्नतिमां सहायक थयी शके छे.

जेनुं वीर्य-स्खलन क्यारेय नथी थतुं तथा जेनी सृजन-शक्ति विशेष सेवाकार्यमां लागी छे तेने जे आनंद प्राप्त थाय छे तेनी सरखामणीमां तथाकथित विषयानंद बहुज नीची श्रेणीनो तथा दुःखमिश्रित छे. कारण के तेमां शक्ति-क्षय छे, आत्मग्लानि पण छे.

ईश्वरनी एक एक कृतिमां जे रहस्य भर्युं छे तेने जाणवुं लगभग अशक्य छे.

आनन्दात् हि एव खलु इमानि भूतानि जायन्ते.

आ संस्कृत भाषानी एक उक्ति छे. समस्त भूतमात्रनी उत्पत्ति आनंद-मांथीज थाय छे. आत्मा आनंद स्वरूप छे. आनंद-स्वरूप आत्मामांथी आनंद स्वरूप जीवात्मानी उत्पत्ति थाय छे. गर्भाधानना समयपर स्त्री-पुरुषोनी जे मानसिक स्थिति होय छे तेनी असर गर्भउपर थाय छे. तेथी ऋषियोये कह्युं छे के ज्यारे स्त्री-पुरुषोंने एकबीजा प्रत्ये खूब प्रेमनो अनुभव थाय त्यारे एकाद उच्च तथा महान् आत्मानो पोताने घेर जन्म थाय एवी उदात्त आकांक्षा तथा पवित्र भावनाथी प्रेरित थयीनें गर्भाधाननी क्रिया करवी जोइये. ते वखते अत्यंत प्रेम अनें थाकथी आपणो अहं आत्मामां लीन थई जाय छे. आ लगभग समाधिनी स्थिति छे पण क्षणिक छे. जो आ स्थिति वधुवार टके अनें त्यार बाद आपणी बुद्धि ते स्थितिनुं ठीक ठीक आकलन करी शके तो आपणे मुक्तज छीए. साचे रस्ते थी आपणे त्यां नथी पहोंचता एमाटे तेनुं आकलन नथी थतुं.

जो मनें मारा मित्र उपर अगाध प्रेम होय, निरतिशय प्रेम होय, एवो मित्र माराथी विखुटो पडे अनें घणा समय पछी कोई एकांत तथा शांत स्थान उपर ते अचानक मळे तो आमां संदेह नथी के प्रेम अने हर्षना कारणे हुं थोडा समय माटे आ दुनिया तथा पोताना शरीरनें भूली जाउं. आवी स्थितिमां स्वयंप्रकाश आत्माज आवरण-रहित थईनें पोतानां मूळ स्वरूपमां प्रकाशे छे. एज आपणुं स्वरूप छे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपणे घरमां बेठा होईये ते वखते आपणा घरना बारणा पासेथी कोई झटपट आगळ चाल्युं जाय तो आपणनें खबर नहि पडे के ते कोण हतुं. एटलुंज जणाशे के कोई पसार थयी गयुं. एवीज रीते आ आनंदनी स्थिति जो के बहुज थोडी वार टके छे तेथी आपणनें तेना रहस्यनी भाळ मळती नथी.

एवी स्थितिमां हुं कही शकुं ते मित्रना मळवाथी प्रेमोत्कर्षनें कारणे हुं आनंदमां डुबी गयो हतो, निरतिशय आनंदनो मने अनुभव थयी गयो.

हवे प्रश्न ए छे के ज्यारे हुं ते निरतिशय आनंदमां लीन हतो त्यारे मने आनंद थयी रह्यो छे एनुं जागतुं भान हतुं ? हुं कहीश के ना भाई ए वखते तो मात्र आनंद सागर उमटयो हतो. अर्थात् जेवी रीते अरीसामां आंखज आंखनें जुए छे. तेम त्यां आनंदज आनंदनो भोक्ता हतो. त्यां आवरण रहित साक्षित्व तथा आनंद जूदा जूदा न हता. सूक्ष्म अनें शुद्ध बुद्धिनेंज अहिं आ गूढ रहस्य समजाशे के ए आनंदज मारुं साचु स्वरूप छे. आ जडदेह मारूं असली स्वरूप नथी. शरीर अनें मननें आ आनंदनो अनुभव थयो नही कारण के ते बन्ने त्यां हाजर न हता. त्यारे प्रश्न ए थाय छे के शुं ते देशकाळातीत नामरूपातीत आनंदज मारुं असली स्वरूप न हतुं ? शुं तो साक्षी-स्वरूप आनंद एज हुं न हतो ?

स्त्री–पुरुष बन्ने परमात्म–स्वरूप छे. बन्ने शरीररूपी अरीसानो आधार लईनें पोतानाज स्वरूपमां लीन थयी जाय छे अनें अपरिमित आनंदनो अनुभव करे छे परन्तु आ रहस्यनें न जाणवाथी सहवासनी क्रियामांज आनंद छे एम मानीनें बन्ने मूर्ख बने छे.

जे पुरुष अगर स्त्रीनी बुद्धि एटली सूक्ष्म अनें शुद्ध थई गई होय ए आ रहस्यने जाणी शके तो इच्छामात्र थी पोताना "अहं" नें आत्मामां लीन करीने ब्रह्मानंदनो अनुभव करी शके.

बीडी, सिगरेट के दारू जेवा दुर्व्यसनोनी वात करीए. एवा लाखो लोको

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मळशे जे ते वगर रही शकता नथी. शुं बीडी सिगरेटनी वासना पण परमात्माए बनावी छे ?

खान–पान नो दाखलो लो! आहारना मूळ उद्देशनें भूलीने आपणे आरोग्य-नाशक परंतु स्वादिष्ट चीजो खाईए छीएः तेनें बनाववामां घणो समय अनें पदार्थो व्यर्थ जाय छे. तेथी आपणी जीभ स्वाभाविक स्वाद भूली जाय छे. अस्वाभाविक अनें विकृत स्वादनी टेव पडे छे. बाळको तो तीखू नथी खातां परंतु धन्य छे आपणी अक्कलनें के मरचां जेवी वस्तु पण आपणे पचावीए छीए. तेना वगर आपणनें चालतुं नथी.

कपडांनी बाबतमां पण एज वात छे. ठंडी गरमीथी रक्षण माटे आपणनें कपडांनी जरुर छे. परंतु आजकाल शहेरी वर्ग अने विशेष करीनें स्त्रीओ केवल फेशनने माटेज कपडां पहेरे छे, जातजातनी विकृत सौंदर्यनी साडीओ पहेरवानी पण वासना बनी छे.

भूख अनें तरस भगवानें पेदा कर्या छे जेथी शरीर जीवतुं रहे, परंतु खावापीवानी कोई वासना भगवाने बनावी नथी. अन्न पाणी आपणे वधुमा वधु शुद्ध रूपमां खाईये पीए तो आपणी बुद्धि शुद्ध अनें शरीर नीरोगी रहे.

श्वास लेवानी कोई वासना होती नथी, ते एटली सरळ क्रिया छे के आपणनें खबर पण पडती नथी के आपणे श्वास लई रह्या छीए.

घणा कहे छे के आ भगवाननी माया छे. दुस्तर छे. "माया" शब्दनो अर्थ एवो थाय छे के "जे नथी ते" जे नथी तेनें मानवाथी जरुर अनर्थ थाय छे. चकली अरीसामां पोतानुं प्रतिबिंब जोईनें एम समजे छे के कोई बीजी चकली चांच मारवा आवी छे. ते पोतेज चांच मारे छे. थाकी जाय तो पण चांच मार्याज करे छे. परंतु माणस अरीसामां पोतानो चहेरो जोईनें खुश थाय छे. सृष्टिरूपी अरीसामां पोतानु रूप जोईनें खुश थवानें बदले मनुष्य अज्ञानने कारणे द्वैत उभुं करे छे तथा लडवा मांडे छे. पछी तेने 'माया' नाम आपे छे.

हवे हुं फरीथी मूळ विषय उपर आवुं छुं. जीवात्मानी प्रकृत भूख परमा-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

त्मामां लीन थवानी छे. पोताना विशाळ सच्चिदानंद स्वरूपमां पोताना परिच्छिन्न अहंने लीन करवानी छे.

आ भूखने तृप्त करवा माटे ज्यारे इन्द्रियोनो आशरो लेवाय छे के खोटो रस्तो पकडाय छे त्यारे दुःखोनी सृष्टि थाय छे. हजी मानवजाति जंगलमां भटकी रही छे. ज्ञान-विज्ञानना साधनो वध्यां छे. एनी वृद्धिनी साथे साथे अनर्थ, दुःख, संकट, द्वेष, हिंसा अविश्वास, मिथ्याचार, स्वार्थ-लोलुपता, सत्ताकांक्षा इत्यादिनी उत्तरोत्तर वृद्धि थती जाय छे. आज दुनियामां युद्धने माटे जेटलुं खर्च थाय छे तेटलुं जगतना कल्याण माटे खर्च करवामां आवे तो दुनियामां क्यांय पण दुःख अने दारिद्रय न देखाय. आखो मानव-समाज आज आ शोषणाधारित तथा युद्धोन्मुखी समाज-रचनामां जाण्ये अजाण्ये सहभागी छे. आ जीवननी खोटी दिशानुं परिणाम छे. अन्यथा आजना जेवी परिस्थिति त्रण दिवस पण न टकी शके.

आ स्थिति जोतां जोतां आपणे तेना हेवायां थई गया छीए. आपणने आ हालतनी भयंकरता तथा असह्यता जणाती नथी, आपणी संवेदन-शीलता लगभग समाप्त जेवी थई गई छे.

आपणे एम समजवा लाग्या छीए के आ स्थिति हमेंशा आवीज रहेवा-वाळी छे.

आनो अर्थ ए थयो के आपणामां स्वतंत्र विचार करवानी शक्ति रही नहि. आपणा मन उपर सम्मोहनास्त्रनी असर थयी छे. आपणा अंतरात्मानो अवाज आ कोलाहलमां विलीन थई गयो छे. आपणा कानो सुधी ते पहोंची शकतो नथी. तेथी आपणे आ राष्ट्रीय अने आन्तर्राष्ट्रीय दुरवस्थामांथी बहार निकळवानो कोई सामूहिक प्रयत्न करता नथी. परिस्थितिनी गुलामी आपणे स्वीकारी लीधी छे.

बराबर एज प्रमाणे भगवाननी नहि पण आपणे पोते उत्पन्न करेली काम-वासनानी गुलामी आपणे स्वीकारी लीधी छे. आ गुलामी राष्ट्रीय तथा आंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रमां मनुष्यने कोची-कोचीने खाई रही छे, बंगला देशथी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अहीं जे शरणार्थी आवी रह्या छे तेमां जुवान छोकरीओ बहुज ओछी छे. ते क्यां गई? तेओमांनी घणीओपर बळात्कार थाय छे, त्यारबाद कदाच तेनी हत्या थती हशे के भगाडी जवामां आवती हशे. आ बधी वातो मानव-जातिनें माटे अत्यंत शरमनी वात छे. अमेरिका अनें इंग्लैंडमां १२ थी १६ वर्षनी छोकरीयो लग्न थतां पहेला गर्भवती थाय छे. भारतमां पण कई ओछो अनर्थ नथी. हवे आपणे काम-वासनानी गुलामीमांथी मुक्त थवुंज जोईए.

बाळमनोविज्ञाननी जाणकारी राखनारी बहेनो जे बाळकोनें उछेरे छे ते संस्कारवान नीरोगी तथा पुरुषार्थी निकळे छे, मूर्ख माताओना बाळको उद्धत, लुच्चा अनें निरूपयोगी थाय छे.

तेमज माणसनें बनाववामां ईश्वरनो उद्देश माणस तथा तेनी बनावट वगेरे विषयोंनुं ज्ञान प्राप्त करीनें जो आपणे तेना सर्वांगीण विकासमां मदद करवा-वाळी समाज-व्यवस्था, शिक्षण-व्यवस्था, अर्थ-व्यवस्था तथा शासन-व्यव–स्थानो पायो नाखिये जेथी सर्वत्र अनर्थोनें बदले मांगल्यनु दर्शन थाय.

विश्वव्यापी प्रेम

मनुष्य मूलतः प्रेम-स्वरूप छे, बाळकनें सौथी पहेलां प्रेमनोज परिचय मळे छे. बाळकोनें माबाप के बीजाओथी प्रेम न मळे तो तेओ जीवी शके नहि. बाळक पोतानु के पारकुं जाणतुं नथी. सर्प साथे पण ते रमे छे. आपणी समाज-रचना एवी होय के पोता-पारकानो भेदभाव न होय. आखुं गाम एक कुटुंब बनें. घर घर गामडां गामडां तथा देश देश वच्चे कोई भेदभावनी भींतो न होय.

संकुचित प्रेम एज अनेंक अनर्थोनुं मूळ छे. विषय-वासना होय के बीजी कोई वासना बधी वासनाओंना मूळमां अपणी खोटी धारणाओ, जीवननी खोटी दिशा अनें समाज-व्यवस्थानो अन्यायपूर्ण आधारज होय छे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सेवामय–जीवन

प्रेम सेवाना रूपमां प्रकट थाय छे. प्रेम निष्क्रिय होतो नथी. आपणे आजीविका चलाववा जे धंधो करीए छीए ते समाजोपयोगी होवो जोईए, ते उद्योगोनेंज समाज–सेवानुं साधन बनावीए. ते उद्योग आरोग्यनाशक के दुर्गुण-वर्धक न होवो जोईए. संपत्ति उपर व्यक्तिगत अधिकार न राखीए, समाजनी प्रेमपूर्वक सेवामांज आनंद छे, आत्मोन्नति पण छे. समाजमां संग्रह तथा स्पर्धाने माटे कोई स्थान न होवुं जोईए.

उत्पादक श्रम

परमात्माए भूख आपी छे, हाथ पण आप्या छे. जमीन पण आपी छे. आपणे कोई पण प्रकारनुं उत्पादक कार्य, श्रम, अथवा समाजोपयोगी शरीर श्रम करीने पोतानुं गुजरान करीए. अक्कल, कलम, नाणां अथवा सत्ताना बळ उपर; उत्पादन करनार वर्गने लुंटीने आराम अने संग्रह करवानी वृत्ति आपणने स्पर्धा, द्वेष, युद्ध अने विनाशनी तरफ लई जाय छे. आ राक्षसी सभ्यता छे. आ पश्चिमनी नकलनु परिणाम छे. जे प्रेमथी जमीनमां उत्पादक श्रम करशे, पोते उत्पन्न करेलुं समाजने अर्पण करशे अने जे कांई करशे ते समाजना कल्याण माटे सेवा-भावथी करशे तेने तेवोज आनंद प्राप्त थशे जेवो कोई कलाकारने तन्मय थईने कोई मूर्ति बनाववामां थाय छे.

तात्पर्य ए के आपणी समाज-व्यवस्थानो आधार होवो जोईए—विश्वव्यापी प्रेम, सेवामय जीवन, जीवनोपयोगी उत्पादक श्रम, अने ए बधानो हेतु ब्रह्मनी प्राप्ति.

आवो जे समाज हशे ते मनुष्यने रहेवा लायक हशे, आरोग्य, बळ, आयुष्य, अने सद्‌गुण वधारनारो हशे. ईश्वरनी प्राप्ति करावी देनारो हशे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चराचर सृष्टि बधी ईश्वरीय प्रेम, आनंद अने सौंदर्यनी अभिव्यक्ति छे. आपणे आने ओळखीए जोईए अने आनंदमा मस्त रहीए.

आवी समाज-व्यवस्थामां विषय-वासना के बीजी कोई वासना देखाशे नहीं, तेनुं नामोनिशान पण नहि रहे. तेनाथी थता अनर्थोनुं कोई स्थान रहेशे नहीं.

जीवनना दरेक क्षेत्रमां ईश्वर अने प्रकृतिना नियमोंनु उल्लंघन करीने शाश्वत काळसुधी सुखशांति अने समृद्धिनो अनुभव करवानी महत्त्वाकांक्षा राखनारी आपणी सर्वथा अवैज्ञानिक अने राजनैतिक बुद्धिनें आपणे एकवार तिलांजलि आपी दईए तो दुनियानो नकशो बदलाई जाय.

एवी स्थितिमां लग्न वगर नहि चाले, सरकार वगर नहि चाले, बीडी, सिगरेट. के दारू वगर नहि चाले, बंदूक तोप तथा एटमबम वगर नहि चाले, धर्म-भेद, रंगभेद, जातिभेद, राष्ट्रभेद, भाषाभेद, दल-भेद इत्यादि अनंतभेदो वगर नहि चाले एवा अनंत भ्रमोनी जाळमांथी आपणी मुक्ति थशे. एवी हालतमां आपणो श्वास रुंधाशे नहि, आपणे खुली हवामां श्वास लई शकीशुं.

आखो मानव-समाज मळीने पण ईश्वर के प्रकृतिना नियमोंमां कोई फेरफार नहिं करी शके. ईश्वर के प्रकृतिथी लडीनें जीती शकशुं नहिं. आपणुं श्रेय एमांज छे के आपणे ईश्वरना नियमोनें ओळखीए अने आपणी समाज–रचना तदनुकूल बनावीए.

भगवत् कृपाथी संतो अने महापुरुषोए आपणनें ईश्वरना नियमो तथा उद्देशोंनुं ज्ञान कराव्युं. आपणे तेनें अव्यवहारिक मानीनें जुद्रे रस्ते चालीए छीये. तेना परिणाम आपणी सामे छे. हजु पण आपणे जागीए तो घणुं सारूं.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भाग २

दिशाभूल

आपणा साहित्यमां ब्रह्मचर्य शब्दनो जे अर्थ छे ते अर्थनो शब्द बीजा देशोना साहित्यमां मळतो नथी. ब्रह्मचर्यनो अर्थ–ब्रह्मनी के बीजी कोई महान् वस्तुनी प्राप्तीने माटे करवामां आवती साधना. लग्न न करवानी साथे तेने कोई सीधो संबंध नथी. कोई पण महान् कार्यने माटे वीर्यना ऊर्ध्वगमननी जरूरत छे, लग्न करीने पण जे केवळ संतानोत्पत्ति माटेज जीवनमां एक बे वार स्त्री–संग करे छे ते पण ब्रह्मचारीज छे.

पेशाब आपणी इच्छा विरुद्ध शरीरनी बहार जतो नथी. तो पछी वीर्य केम जाय ? जो जाय छे तो तेनुं कारण आपणी खोटी धारणाओ अने प्रकृति विरोधी जीवन छे.

विषय–वासनाथी रक्षण मेळववा माटे भारतमां जे साहित्य लखायुं छे तेनी विपरीत असर थाय छे. तेनाथी विषय–वासनानी बीक मजबूत थाय छे. कहे छे के कोई एक गुरुए पोताना शिष्यने मंत्रोपदेश आपीने कह्युं के जुओ ! आ मंत्रनो जप करती वखते वांदरोंनी याद न आववी जोईए.

आनुं परिणाम ए आव्युं के ज्यारे पण शिष्य मंत्रजप करवा बेसतो त्यारे तेने वांदरानी याद आवी जती, वांदरानी वात न कही होत तो तेने वांदरानी याद आवतज नहि. एवीज रीते भूतनी बीक सारी रीते मनमां ठसावीने पछी भूतथी बचवा माटे कहेवाथी भूतनो भय वधशे.

राजा भर्तृहरिए त्रण शतक लख्या छे. नीति-शतक, शृंगारशतक अने वैराग्य शतक. शृंगार शतकमां स्त्रीना शरीरने आनंदनी खाण बतावी छे. वैराग्यशतकमां स्त्रीनी निंदा छे. बन्ने शतकमां साची दिशा बतावी नथी. प्रजोत्पत्तिनो मुख्य विषय तेमां नथी. एक उचित व्यवस्थाने मनुष्यनी बुद्धिए जे विपरीत स्वरूप आप्युं छे तेमां तेनुं यथेष्ट वर्णन छे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आ विषयनूं बीजूं पण साहित्य मळे छे. जे माणसने मूर्ख, गांडा के पिशाच बनावी शके छे.

खेतीनुं शास्त्रीय ज्ञान धरावनारो माणस ओछामां ओछी जमीनमां वधुमां बधु उत्तम अन्न पेदा करे छे तेवी रीते संतानात्पत्तिनु शास्त्रीय ज्ञान मेळवीने मनुष्य जोईए तेवा चारित्र्यवान बलवान, महान, धीरवीर तथा पुरुषार्थी संतान पेदा करी शके छे. आ विषयनो उल्लेख उपरोक्त शतकमां नथी.

आजकाल लग्न तो घणां थाय छे. परन्तु वर-कन्याने संतानोत्पत्ति के शिशु-मनोविज्ञाननुं ज्ञान अपातुं नथी. तरतां शीखव्या वगर कोई माणसने भर दरीये धकेली देवा जेवुं आ काम छे. आना फळस्वरूप दुनियामां अनेक शारीरिक तथा मानसिक रोगोथी युक्त बाळको पेदा थाय छे. वादळां गमे तेटला घेरायां होय तो पण सूर्यनो प्रकाश थोडो घणो रहे छेज तेवीज रीते ईश्वर आपणां बधांना हृदयमां होवाथी आपणे आपणा विनाशनी, अने दुर्गुणोंनी वृद्धिनी गमे तेटली योजनाओ बनावीशुं•तो पण सद्‌गुणोंनो प्रकाश थोडो घणो रहेशेज.

अमेरिकामां विषय-वासना तथा तेनी तृप्तिने अत्यंत घृणास्पद रूप अपायुं छे. ते संबंधी त्यां घणा पुस्तको छपाय छे. कहे छे के त्यां पिशाचोने पण शरम आवे एवी विद्यानुं शिक्षण आपनारा विश्व-विद्यालयो स्थापित थयां छे. त्यांना गंदा साहित्यनुं भारत उपर आक्रमण थयी रह्युं छे. पश्चिममां जे कई निकृष्ट छे तेनी नकल करवावाळी अहींनी राजनीति छे. ते कारणे भारतनो नैतिक ह्रास केटली तीव्र गतिथी थई रह्यो छे तेनी कल्पना कोई सहसा करी शकतो नहीं. तेने वाचीने श्री काका कालेलकरजीए जे लख्युं छे तेनो आशय छे—आ साहित्य वांच्या पछी मने तो एवो भास थयो के हूं नरकमां डुबकी मारीने बहार आव्यो, आ साहित्यनुं भारतपर थनारा आक्रमणने हुं चीनी आक्रमणथी वधारे भयानक मानुं छुं. भारतनी युवान पेढीने आ आक्रमणथी केम उगाराय ते एक प्रश्न छे.

अन्न अने फळोने एना कुदरती रूपमां खावाने बदले तेनो दारू बने अने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

खूब ठींचवामां आवे, पछी भान गुमावी रस्तानी वच्चोवच के खाडामां आथडया करे अने एनेज आनंद-प्राप्तिनुं साधन माने तेमज बीजाओ पण दारू पीवानुं उत्तेजन आपे, आवा विषयोपर पुस्तको लखे, तेने कोई सुंदर उपनाम आपे अने एमांथी मुबलख पैसा कमाय त्यारे पशुओ पण आपणी मनुष्यनी आ हीन अकल पर आंसू सारतां हशे.

एवीज रीते संतानोत्पत्ति माटे भगवाने जे जे व्यवस्था करी छे तेनुं आपणे उल्लंघन करी "श्रृंगार रस" अने 'विषय-वासना' मां फेरवी छे. जाते शारीरिक अने नैतिक पतनना ऊंडा खाडामां पडी आवा अति-श्रृंगारिक, कामोत्तेजक गंदा पुस्तको लखी दुनियाना लोकोने पण अधोगतिने मार्गे दोरी अढळख संपत्ति पेदा करवानुं साधन बनाव्युं छे. आपणी आ दुर्मति जोईने बधा महापुरुषोनी आंखमां आंसुनी धारा वहेती हशे.

पुरुष-वर्गनी आ पैशाचिक लीलानुं वधु परिणाम स्त्रीओनेज भोगववुं पडे छे. तेनुं थोडुंक वर्णन अहीं करूं तो अस्थाने नहि गणाय.

पर्दा-प्रथा, दहेज-प्रथा, वेश्यावृत्ति, व्यभिचार, बळात्कार, संतति-नियमनना गैरकुदरती साधनो, बालविवाह, सती-प्रथा, बहुपति-प्रथा, बहुपत्नी-प्रथा इत्यादि खास खास कुरीतियो तथा तेना परिणामनुं अहीं थोडामां वर्णन करूं छुं.

ज्यां ज्यां पर्दा-प्रथा चाले छे त्यां त्यां लाखो स्त्रीओ शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक अने आध्यात्मिक दृष्टीथी चिमळाईने विनष्ट थई रही छे. तेवी स्त्रीओथी केवां उत्तम बाळको पेदां थई शके ? तेमना घर तेमनी जेल छे, पती तेना जेलर छे. मृत्युसुधी घररूपी जेलोमां बंध रहेवाने कारणे ते भीरुता. अज्ञान तथा संकुचित विचारोनी शिकार बने छे. तथा जुवानीमांज वृद्ध थई जाय छे. उत्तरभारतमां भणेला वर्गनी स्त्रीओ पर्दामां रहे छे. पर्दो इज्जतनुं चिह्न मनाय छे. आ प्रमाणे लाखो स्त्रीओने जेलखानामां बंध करवाने बदले पुरुषो लग्नज न करे तो सारुं थाय.

लग्न जेवा पवित्र अने धार्मिक संस्कारमां पण पैसानुं बजार लागी जाय छे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वरनी शिक्षण तथा आर्थिक योग्यता अनुसार तेनुं मूल्य मपाय छे. दीकरी-वाळा गरीब होय तो तेनुं देवाळुं निकळी जाय छे. कईक कन्याओ आत्म-हत्या करीनें मा-बापने बचावी ले छे. कोक ठेकाणे दीकरी जन्मतांज तेनुं गळुं दाबी मारी नाखे छे. लग्नना खर्चथी बचवानो आ उपाय छे. खोटी आबरूनो विचार माणसनें स्वाभिमान-शून्य बनावी दे छे. कन्यावाळा बदनामीनी बीके गमे तेम करीनें लग्न करी आपे छे. कन्याओ पहेरामणी मांगवावाळा साथे लग्न करवानी साफ नापाडी दे अनें आजीवन सेवामय जीवन वितावी दे तो समाजमांथी आ रिवाज दूर थई शके. कन्याओनें शरुथीज आ प्रकारनुं ज्ञान दईनें हिम्मतवान् बनाववी जोईए. गामडाओंमां अनेक अशिक्षित बाळ-विधवाओ पवित्र जीवन वितावती देखाय छे. आ कई अशक्य वात नथी.

समाजना अनें कुटुंबना अत्याचारोथी त्रासी जईनें घणी स्त्रीओ वेश्याओ बने छे. कहे छे के चीनमां एक पण वेश्या नथी. मुंबई जेवा शहेरमां वेश्याओना मोहोल्लाओ पण छे. आथी समाजमां अनेक दुःसाध्य रोगो फेलाय छे.

'बळात्कार' शब्द सांभळतां ज रुवांडा उभा थई जाय छे. आ कार्य स्त्रीनें जीवती राखीनें तेना आत्मानुं खंडन करवा जेवुं छे. बळात्कार वखते तेनी मानसिक दशानुं वर्णन कोण करी शके छे? दुनियामां कोई पण देश के खुणामां कोई पण स्त्रीपर बळात्कार थाय तो तेनो विरोध आखी दुनियाये करवो जोईए. ओछामां ओछुं स्त्रीओए तो ते दिवसे रातनी रसोई बनाववी न जोईए. आजनी लोकशाही सरकारो सैनिकोनें छोकरीओ पूरी पाडे छे. आवी व्यवस्था करवावाळा अधिकारिओ भला माणसो गणाय छे. आजनी गंदी, विवेक अनें न्यायशून्य राजनीतिमां क्यांय मानवीय मूल्योनुं स्थान रह्युं नथी. युद्धमां विजयी सेना हारेला देशनी स्त्रीओ उपर बळात्कार करे छे. सरकार तेनें गुनो गणती नथी. सरकारना आ लाडला छोकराओने कोण मनाई करे? आटली हदे आपणे अत्याचारी बनी गया छीए. आपणा जीवनना कोई पण क्षेत्रमां मानवीय मूल्योनुं स्थान रह्युं नथी.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संतति-नियमनना गेर-कुदरती साधनोने पैशाचिक कहूं तो पण मनें समाधान नहि थाय, आनुं दुष्परिणाम पण वधारे प्रमाणमां स्त्रीओनेज भोगववुं पडे छे. प्रकृति आपणने आनेमाटे कदापि क्षमा नहि करे. म. गांधी अने संत विनोबाए आवा साधानोनी कडक टीका करी छे. आ एक एवो अत्याचार छे के अनंत काळ सुधी स्त्री-जातिने पुरुष-जाति पोतानी शरमजनक भोग-लिप्सानो शिकार बनावी शके छे.

सती-प्रथा तो जुनी थई गई छे. पुरुष केटली हद सुधी क्रूर थई शके छे तेनी साबिती आ प्रथा द्वारा मळे छे. नानी नानी दीकरीओने पतिना शबनी साथे जीवती बाळी नाखतां तेना नजीकना सगाव्हालांओने कई कचवाट थतो नहि, कोई रिवाज समाजमां रूढ थया बाद आपणे केटला क्रूर अने संवेदना-शून्य थई शकीये छीये तेनुं आ ज्वलंत उदाहरण छे.

जो आपणे पोतानी माताओ, बहेनो अने कन्याओनें पुरुष-जातिना अत्याचारथी बचाववा मागता होईए, आपणे राक्षस नहि पण मानवी बनवा इच्छता होईए, समस्त मनुष्य-जातिनी नैतिक कब्र न खोदवा इच्छता होईए, मळ-मूत्रमां खदबदता कीडा मंकोडा जेवी जिंदगी न जीववा मागता होईए, कुतरां जेवा मोते मरवा न मागता होईए अनें आपणे तेजस्वी चारित्र्यवान अनें पुरुषार्थी बनवा इच्छता तथा आगली पेढीने माटे सर्वांगीण विनाशनी योजना बनावी आ लोक छोडवा न इच्छता होइए, तेओने मानव जेवी जिंदगी विता-ववा माटे कईक सगवड मुकी जवा मागता होईए तो आपणे समाजमां एवी धारणा रूढ करवी पडशे के विषय-वासना प्रकृति-दत्त नथी, ते तो छेज नहि, मूर्खता अने अज्ञानने लीधे आपणे तेनें अस्तित्व आप्युं छे. हवे आपणे तेनें मानवा चोक्खी ना पाडवी जोईए.

केवळ साहित्य के विचार-प्रचारथी आ दोष जडमूळथी दुर नंहि थाय, समाजनी रचनामां आमूलाग्र परिवर्तन कर्या वगर छुटकारो नथी. म. गांधीए आ समग्र क्रांतिनु चित्र आपणी सामे राख्युं छे. आपणुं कल्याण एमांज छे. भारत आ आध्यात्मिक क्रांतिमाटे उठीने उभुं थाय.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भाग ३

स्त्री जातिने विनंती

स्वा. दयानंद, स्वामी विवेकानंद, म. गांधी अने संत विनोबाए भारतनी स्त्रीओ पासे घणी आशा राखी छे. आ विभूतिओए स्त्री-शक्तिनें जगाववा घणुं कार्य कर्युं छे. भारतनी संस्कृतिनें पूरी रीते नष्ट थती बचाववानुं कईक श्रेय 'स्त्रीओनें आपी शकाय एम छे.

आज फरी स्त्रीओने पहेल करवी पडशे. गांधीजीए युरोपनी एक स्त्रीने कह्युं हतुं के युरोपमां क्यांय पण युद्ध फाटी निकळे तो त्यांनी सर्व स्त्री-ओए दुःखसूचक काळा रंगनो पोशाक पहेरवो जोईए. आटली पण हिम्मत स्त्रीओ करे तो एक सप्ताहनी अंदर युद्ध बंध थयी जाय.

हवे स्त्रीओए जागी जवुं जोईए. तेमणे क्रान्तिनी दुंदुभी वगाडवी जोईए देशनो वहीवट पोताना हाथमां लेवो जोईए.

आज बंगला देशमां शुं थयी रह्युं छे? हजारो स्त्रीओ उपर बळात्कार थयी रह्या छे. तेनें भगाडी जवामां आवे छे. शुं तेमनी मनोदशानी आपणे कल्पना पण करी शकीशुं? काले एवुं संकट आपणा उपर नहि आवे तेवी खात्री आपणनें कोई आपी शकशे?

नागपुरमां थोडा वर्षो पहेला एक दुःखद घटना बनी हती. एक नाट्य-ग्रहमां गायननो कार्यक्रम हतो. नागपुरनो शिक्षित-वर्ग सांभळवा आव्यो हतो. कोई कारणथी गायिकाने आववामां वार थयी. घणा समय सुधी लोकोए वाट जोई. छेवटे लोको भडकी उठ्या, विजळीना दीवा फोडी नाख्या. अंधारू थतांज पुरुष-वर्गना माथामां शैतान प्रवेश्यो. जेना हाथमां जे स्त्री आयी तेणे तेना पर बळात्कार कर्यो. आ लोकोमां वधारे कॉलेजना विद्यार्थी अने विद्यार्थिनिओ हता. एमां कंई आश्चर्य नथी के आ अंधारामां कोईए पोतानी मा के बहेन पर पण बळात्कार कर्यो होय. पाछळथी पोलीस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आवी अनें कईक व्यवस्था थई. सांभळीये छीये के दिल्हीमां जुवान छोकरीओनें रस्तामां फरवुं मुश्केल थई गयुं छे. कोलेजो तथा विश्वविद्यालयना विद्यार्थियो एमनी साथे अश्लील ठेकडी करे छे. कांकरा पथरा मारे छे, धक्का दे छे. बसमां छोकराओ स्त्रीओ साथे एवुं वर्तन करे तो पण कंडक्टर अनें बाकीना लोको जोता रहे छे. कोई विरोध करता नथी. गांधीजीनी सामे पण आवा प्रश्नो आवता हता. तेओ कहेता हता के स्त्रीओए पोताना शरीरनी सजावट मूकी देवी जोईए. हिम्मतवान बनवुं जोईए. फरियाद करवानें बदले स्त्रीओ आवा गुंडाने बे थपड मारी तो जुए! हिम्मत राखवाथी एटलामां काम बनी शके.

हाल्मांज एक गाममां बनेंली हकीकत छे. एक खेडूतना घरमां राते त्रण चोर घुस्या. घरना पुरुषो बीकना मार्या चुप रह्या. जुवान स्त्रीए लाकडी हाथमां लीधी. अनें सिंहणनी जेम त्रणे पर त्राटकी, एक तो त्यांज मरी गयो. बाकीना बे नासी गया. चोरो पासे हथियारो हतां. अन्याय करनारामां साहस होतुं नथी. तेओ निर्भय स्त्री–पुरुषोनी सामे टकी शकता नथी.

घरघरमां छोकराछोकरीओनें सदाचार, संयम अनें निर्भयतानु शिक्षण मळे तो अनें फैशन, सिनेमा, तथा इन्द्रियोनी गुलामीनुं शिक्षण न मळे, तो आवी घटनाओ न बनें. लीमडो वाववाथी केरी उगती नथी. आटली दुरवस्था पछी हवे स्त्रीओए जागी जवुं जोईए.

मोटा मोटा शहेरोमां कुशळ वेपारीयो जाहेरातद्वारा एकाद फेशन शरु करीनें करोडो रुपया कमाई शके छे. आवी फेशन जोतजोतामां आखा शहेरमां फेलाई जाय छे. जाणे एम लागे छे के शहेरमां कोई स्वतंत्र विचार रह्योज नथी. बहेनो पोताना घरमां एवी निरर्थक फेशन न आववा दे तो शहेरो घणा अनर्थोथी बची शके.

आजनी विश्व-व्यवस्थामां हृदय के विवेकनें माटे कोई स्थान रह्युं नथी. अगर होय तो ते दासीनुं छे; राणीनुं नही. हृदय तथा विवेक उपर सतत हुमला थाय छे. हृदय अनें विवेक तर्क-शक्ति के अकलरूपी राक्षसीना पगतळे दबायेल छे. शुं आ दशा जोईनें बहेनो जागशे?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भारतमां विदेशी आक्रमणोथी संस्कृतिने बचाववानुं काम कोईए कर्युं होय तो ते संतो तथा महापुरुषोए. गामडां पण आ आक्रमणोथी घणी हद सुधी बच्या छे. बहेनोनो पण एमां घणो फ़ाळो छे.

छोकरीओ सौथी वधु निष्पाप अने पवित्र होय छे. तेओ शहेरोना प्रवाहमां खेंचाईने पतन तरफ जती अटके तो पण घणी संतोषनी वात छे.

भारतना इतिहास काळमां घणी एवी घटनाओ थई छे. गुजरातनी बात छे. मने नाम याद नथी. एक सुंदर ग्राम-कन्याने जोईने घोडेसवार युवराज तेना शरीर पर पोतानी रेशमी शाल फेंके छे, ते थुवती युवराजने धिक्कारे छे. घेर आवी मृत्युसुधी उपवासनी प्रतिज्ञा करे छे जेथी भविष्यमां कोईने आ प्रमाणे हेरान करवानी कोई पण हिम्मत न करे. लोको समजावे छे. परन्तु शाबास ते कन्याने. कन्या अडग रहे छे. वात फैलाई जाय छे. युवराजने पश्चात्ताप थाय छे. कन्यानी पासे आवी ते क्षमा मांगे छे. परन्तु कन्या उपवास छोडती नथी. मोतने दिवसे हजारो माणसो भेगा थाय छे. ते गाममां तेनी खांभी स्थपाय छे. कहे छे के आजे पण त्यां आ खांभी छे. लोको त्यां दर्शने जाय छे. माटे हे कुमारीओ, तमारामां हजु पवित्रता छे, दिव्यता छे. तेने बहार लावो. ते शक्तिपर विश्वास करो. अने भारतने बचावानुं काम करो.

शहेरनी स्त्रीओए हजी पण पुरुषो जेटली वैचारिक गुलामी स्वीकारी नथी. आज-काल शिक्षित लोकोना लग्नमां ज्यां वर कोट, पेंट नेकटाई अने बूटथी सजावट करे छे त्यां वधु साडी पसंद करे छे. वाजिंत्रो पण ओछा खर्चाळ सीधासादा पसंद नथी करता, विदेशी पसंद करवामां आवे छे. जाणे के विवाह इंग्लैंडमां थई रह्या छे. केवळ दीकरी भारतीय छे.

भारतनी माताओ! बहेनो! अने कन्याओ! भारतमां हालमां थयेली महान् विभूतीओना आदेश अनुसार तमे लोको भारतने आकार देवानी कोशिश करो तो अहीं एक अद्वितीय नैतिक शक्तिनो उदय थई शके छे.

स्त्रीओ शुं करी शके छे तेनुं एक उदाहरण अहीं आपुं छुं. मंगरोठ नामना उत्तर-प्रदेशना एक गामनुं ग्रामदान थयु हतुं. ग्रामदाननो अर्थ छे के जमीन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ईश्वरनी छे एवुं समजीने जनसंख्याप्रमाणे जमीन वहेंची लेवी, तेना उपर व्यक्तिगत अधिकार राखवो नहि. संत विनोबा सामे गामलोकोए प्रतिज्ञा करी. एक वर्ष सुधी गामना लोको चुप रह्या. पछी गामना पुरुषवर्गे नक्की कर्युं के ग्रामदान रद करवुं. ते गामनी स्त्रीओने ज्यारे ए वातनी खबर पडी के तुरत ए स्त्रीओए मळीने नक्की कर्युं के ज्यां सुधी पुरुष-वर्ग पोतानी प्रतिज्ञानुं पालन न करे त्यां सुधी घरमां चुलो पेटाववो नहि. आखा गामने उपवास करवो पड्यो. फरीथी पुरुषो भेगा मळ्या, प्रतिज्ञा फरीथी मंजुर रखाई अने जमीननी वहेंचणी करी. त्यार बाद ते लोकोए सामूहिक उन्नतीना अनेक कास कर्यां. आ हकीकत बतावे छे के स्त्रीओ शुं करी शके छे !

युरोपना एक नाना देशनी वात छे. प्रचंड शत्रुसेनाना आववाना समाचार सांभळी आ देशनी नानी सेनाए क्यांक संताई जवानुं योग्य मान्युं. परन्तु सेनापतिनी दीकरीए छुपाववानो इन्कार कर्यो. लोकोए तेने घणी समजावी परन्तु ते मानी नहि. शत्रुसेनाना सेनापतिए एने पकडी लीधी. तेने पूछवामां आव्युं. "तमारी सेना क्यां छे ते बताव" तेणे बतावबानो इन्कार करी दीधो. तेना अंगे अंग कापवामां आव्यां, आंखो काढी लीधी, स्तन कापी नांख्या. अनेक प्रकारना यातनाओ आपी. छोकरी अडग रही. वाहरे आत्मबळ ! ते झुकी नहिं, तेना प्राणपंखेरू अंतमां उडी गया. सेनापति उपर ते कन्यानुं अलौकिक बलिदान खुब प्रभाववंतु निवडयुं. बिचारो सेनापति ते देशने छोडीने चाली निकळ्यो.

भारतनी स्त्रीओना त्याग तथा साहसनी वातो हुं अही नथी लखतो. भारतना समस्त महापुरुषो स्त्रीओथी एवी आशा राखे छे के ते देशने सांस्कृतिक आर्थिक तथा अन्य विपत्तियोथी बचाववा माटे सामूहिक पगलां भरे.

अंतमां हुं भारतनी समस्त नारीजातीने विनंति करूं छुं के तेओ भारतना महापुरुषोनुं साहित्य वांचे, अध्ययन करे, पोताना हृदयने वधुमां वधु संवेदनशील बनावे. पुरुषोंना कहेवामां न दोरवाय. भारतने तथा भारतद्वारा जगतने आसुरी संस्कृतिना आक्रमणथी बचाववा माटे पहेल करे.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अहींनी समाज–रचना मूळमां रहेला बे अन्यायोने दूर करे.

१ उत्पादकवर्गनुं शोषण.

२ स्त्रीओउपर चाली रहेला अनेक प्रकारनो अत्याचार.

जो आ बे अन्याय दूर थाय तो आ पृथ्वीउपर ईश्वरीय हवानो संचार थाय, आखी मानव–जाति शारिरीक तथा मानसिक रोगोथी बची जाय. सर्वत्र सत्यम्, शिवम्, सुंदरमूनुं दर्शन थाय.

अहिं भारतनी दशा जोईने स्वा. विवेकानंदना व्यथित थयेला हृदयमांथी निकळेला कईक उद्गार टांकू छुं.

हे भारतवासियो ! तमे भूलशो नहिं के तमारी स्त्रीओनो आदर्श सीता, सावित्री अने दमयंती छे. तमे भूलशो नही के तमारा उपास्य देव तपस्वियोना तपस्वी सर्वस्व त्यागी उमापति शंकर छे. तमे भूलशो नहि के तमारा लग्न, तमारी संपत्ति, तमारूं जीवन, इन्द्रियोंना भोग-विलास माटे नथी, तमारा व्यक्तिगत सुखमाटे नथी. तमे भूलशो नहीं के तमारो जन्म जगदंबाना बलिवेदीपर बलिदान करवा माटे थयो छे. तमे भूलशो नहि के तमारी समाज-व्यवस्था अनंत विश्वव्यापी मातृत्वनुं प्रतिबिंब मात्र छे. तमे भूलशो नहि के भारतनो ते उपेक्षित वर्ग, अज्ञानी भारत-वासी, अशिक्षित भारत-वासी, गरीब-भारतवासी, भारतनो मोची तथा भंगी पण तमारा लोहीना सगपणमां छे. भाई छे. तमे भूलशो नहि के ग्रामीण वर्गनुं उत्थान तथा स्त्री-जातीनी उन्नती भारतनां कल्याणनी पहेली शरत छे.

हे वीर ! तू बहादुर बन ! हिंमतवर बन ! अने ए वातनुं गौरव अनुभव कर के हुं भारतवासी छु. प्रत्येक भारत-वासी मारो भाई छे. मारी बहेन छे. भारतनुं कल्याण मारूं कल्याण छे. रातदिवस प्रार्थना कर के हे गौरीपते ! हे जगज्जननी अंबे, तू मने मनुष्यत्व प्रदान कर, हे सामर्थ्यदायिनी माता ! मारी दुर्बलतानो नाश कर, मारी कायरताने दूर कर, अने मने मर्द बनाव.

☆

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust